हरिभूमि

# महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार, 10 अगस्त 2025

12 वेद मंत्रों से गूंज उठी महर्षि च्यवन की तपो स्थली ढोसी

12 दी केंद्रीय सहकारी बैंक की बैठक में प्रस्तुत किया...

# रक्षाबंधन पर ग्रामीण रूटों पर रहीं रोडवेज बसों में भीड़, परमिट बस संचालकों की चांदी

- प्रदेश सरकार की ओर से महिलाओं को रक्षाबंधन पर्व पर दिया गया था फ्री यात्रा का तोहफा, परमिट बसों में इस बार नहीं लागू था फ्री यात्रा का नियम

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

रक्षाबंधन पर्व पर रोडवेज बसों पर महिलाओं की जबरदस्त भीड़ उमड़ी। प्रदेश सरकार की ओर से महिलाओं को फ्री यात्रा का तोहफा दिया गया था, लेकिन यह सुविधा सिर्फ रोडवेज बसों में लागू रही।

बता दें कि रक्षाबंधन को लेकर बसों में मुफ्त में सफर की सुविधा शुक्रवार की दोपहर शुरू हो गई थी। यह सुविधा शनिवार को भी जारी रही। रविवार की सुबह से ही बसों में भीड़ दिखाई देने लगी। देर शाम तक बसों में महिलाओं के साथ पुरुषों की भी काफी भारी भीड़ रही। यात्रियों की संख्या अधिक बढ़ने के कारण महिलाओं को बस में सवार होने को लेकर भी परेशानी का सामना करना पड़ा। मुख्य मार्गों पर तो रोडवेज बसें किसी तरह भीड़ संभालती रही, लेकिन ग्रामीण रूटों पर बसों की संख्या कम होने से यात्री घंटों इंतजार करते रहे। कई जगह महिलाएं और परिवार बस स्टैंडों पर खड़े-खड़े थक गए। वहीं ग्रामीण इलाकों में रोडवेज बसों की सुविधा न होने पर महिलाओं ने प्राइवेट बसों, आटो का सहारा लिया।

रोडवेज बस स्टैंड पर स्थिति यह थी कि बसें आते ही 10 से 15 मिनट में भरकर रवाना हो जा रही थी। बस स्टैंड के समीप बसों का इंतजार कर रही महिलाओं की लंबी कतारें देखी गईं। इस कमी का

महेंद्रगढ़। बस में चढ़ती महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

फायदा परमिट बस संचालकों ने उठाया। चूंकि इन पर फ्री यात्रा का नियम लागू नहीं था, इसलिए टिकट लेकर ही महिलाओं को यात्रा करनी पड़ी। कई रूटों पर परमिट बसों ने रोडवेज की जगह मोर्चा संभाला और दिनभर यात्रियों से खचाखच भरी रही। यात्रियों ने आरोप लगाया कि रोडवेज की ओर से अतिरिक्त बसें नहीं चलाई गईं, जबकि पहले से अंदाजा था कि रक्षाबंधन पर भीड़ अधिक होगी। वहीं परमिट बस संचालकों के लिए यह दिन जमकर कमाई करने वाला साबित हुआ।

### शहर में दिन के समय रहीं जाम की स्थिति

रक्षाबंधन के चलते दिनभर में शहर में जाम स्थिति रही। वाहन चालक काफी समय तक जाम फंसे रहे। इस दौरान वाहनों की लंबी कतार देखी गई। शहर के स्टेट हाईवे के अलावा राव तुलाराम चौक, बस स्टैंड, बालाजी चौक, 11 हट्टा बाजार, मसानी चौक सहित अन्य मार्गों पर दिनभर वाहनों की लंबी कतार देखी गई। शहर में अतिरिक्त पुलिस बल और ट्रैफिक प्रबंधन के इंतजाम न होने से जाम की स्थिति और बिगड़ गई। दुकानों, बाजारों और बस अड्डे के आसपास खड़े वाहनों ने भी यातायात को बाधित किया। त्योहार के कारण खरीदी-बिक्री के लिए बाजारों में उमड़ी भीड़। साथ ही रोडवेज और परमिट बसों की आवाजाही ने भी यातायात का दबाव बढ़ा दिया।

## खबर संक्षेप

### गढ़ी रूथल खारीवाड़ा में मेला आज

**मंडी अटेली।** बाबा गोगा जाहरवीर का मेला गढी रूथल खारीवाड़ा में 10 अगस्त को भरेगा। इस मेले में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं होंगी। मेले में मुख्य अतिथि बिरेंद्र सिंह यादव रहेंगे। जानकारी देते हुए ग्रामीणों ने बताया कि मेले में कुश्तियां 100 रुपये से लेकर 11 हजार तक करवाई जाएंगी। मेले में कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम विजेता टीम को 15 हजार तथा द्वितीय टीम को 11 हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। वहीं 18 वर्ष आयु वर्ग में कबड्डी प्रतियोगिता मे प्रथम विजेता टीम को 5100 रुपये तथा द्वितीय टीम को 3100 रुपये दिए जाएंगे। मेले में अनेक प्रकार की दौड़ भी करवाई जाएंगी। बुजुर्गों की दौड़ विशेष आकर्षण का केंद्र रहेगी।

### कनीना में आज लगेगा स्वास्थ्य जांच शिविर

**कनीना।** कनीना मंडी स्थित लाला शिवलाल की धर्मशाला में रविवार को सेवा भारती की ओर से हृदय रोग, हड्डी जोड़ व स्त्री रोग जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। सुबह साढ़े नौ बजे से दोपहर एक बजे तक आयोजित होने वाले इस शिविर में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. शिवकुमार गोयल, हर्ष व जयश्री मरीजों की जांच करेगी। जरूरतमंद व्यक्तियों को दवा भी दी जाएगी।

### 7 दिवसीय शिवमहापुराण कथा आज से कांटी में

**मंडी अटेली।** अटेली क्षेत्र के गांव कांटी में गणेश दास के मंदिर में सात दिवसीय श्री शिवमहापुराण कथा आज 10 अगस्त से शुरू की जा रही है, जिसका शुभारंभ अटेली के जनसेवा मंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन बाछौदिया द्वारा किया जाएगा। कथा का वाचन चित्रकूट धाम उत्तर प्रदेश से पधारे शिवमहापुराण कथा के राष्ट्रीय कथा वाचक श्रीश्री 1008 चतुर्भुज दास महाराज के कृपा पात्र शिष्य राष्ट्रीय संत स्वामी कमल दास बापू करेंगे। कथा सुनने का समय प्रतिदिन दोपहर सवा तीन से सायं सवा छह बजे तक का समय रखा गया है। वहीं 10 अगस्त को प्रातः सवा नौ बजे महिलाएं कलश लेकर यात्रा में शामिल होगी।

### गांव आकोदा के बसई मोड़ पर सुबह के समय हुआ हादसा

# रक्षाबंधन पर मातम : तेज रफ्तार कार ने छीनी खुशियां, मासूम की मौत, दादी गंभीर

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

रक्षाबंधन की सुबह जब घर-घर में राखी बांधने की तैयारी चल रही थी। गांव आकोदा में खुशियों के बीच मातम छा गया। करीब 10 बजे बसई रोड पर स्थित बस स्टॉप के पास एक तेज रफ्तार राजस्थान नंबर की डिजायर कार ने 60 वर्षीय सविता और उनके 5 वर्षीय पोते दीक्षित को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भयानक थी कि कार पहले बिजली के पोल से भिड़ी और फिर अनियंत्रित होकर दादी-पोते पर चढ़ गई। बच्चा सड़क पर गिरकर दम तोड़ गया, जबकि दादी गाड़ी के नीचे फंस गईं।

जानकारी के अनुसार राजस्थान नंबर की डिजायर कार खुडाना की ओर से आ रही थी। अचानक चालक का वाहन पर नियंत्रण बिगड़ गया। कार पहले सड़क किनारे लगे बिजली के पोल से टकराई और फिर अनियंत्रित होकर दादी-पोते पर चढ़ गई। टक्कर इतनी तेज थी कि सविता गाड़ी के नीचे फंस गई और बच्चा सड़क पर दूर जा गिरा। हादसा बस स्टॉप के ठीक पास हुआ, जिससे मौके पर मौजूद लोग तुरंत दौड़ पड़े। लोगों ने कार के नीचे से सविता को निकाला और दोनों को एम्बुलेंस से महेंद्रगढ़ के नागरिक अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टरों ने बच्चे को मृत घोषित कर दिया, जबकि सविता को गंभीर हालत में भर्ती कर लिया गया।

महेंद्रगढ़। हादसे के मौके पर पहुंचे मृतक के परिजन व हादसे के बाद पल्टी कार। फोटो : हरिभूमि

### घटनास्थल पर पहले भी हो चुके हैं कई बार हादसे

*लोगों का कहना है कि आकोदा से बसई जाने के लिए नेशनल हाईवे-148 बी से टर्न लेकर मुड़ते समय सड़क पर थोड़ी ऊंचाई है। इस कारण नए और अनुभवहीन चालक अक्सर तेजी से गाड़ी चलाते हैं। यहां पहले भी कई हादसे हो चुके हैं। आज का हादसा भी इसी चढ़ाई पर स्पीड और नियंत्रण खोने के कारण हुआ। ग्रामीणों ने मोड पर स्पीड ब्रेकर और चेतावनी बोर्ड लगाने की मांग की है।*

# 152 डी पर हुआ दर्दनाक हादसा ट्रक हेल्पर की मौके पर मौत

- हादसे में पंजाब के रहने वाले 32 वर्षीय हेल्पर की जान गई, चालक को आई चोटें

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

नेशनल हाईवे-152 डी पर गांव बुचावास के समीप शनिवार देर रात एक भीषण सड़क हादसा हो गया। खराब खड़े ट्रक में पीछे से दूसरे ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में ट्रक के हेल्पर 32 वर्षीय पंजाब के संगरूर निवासी काला सिंह की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि ट्रक चालक रमेश कुमार को हल्की चोटें आई हैं।

जानकारी के अनुसार एक ट्रक हाईवे की तीसरी लेन में खराब हालत में खड़ा था और उसके पीछे संकेतक भी लगाए गए थे। इसी दौरान महाराष्ट्र की ओर जा रहे चालक रमेश कुमार ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि हेल्पर काला सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। मृतक काला सिंह अपने पीछे पत्नी, 6 साल की बेटी और 5 साल का बेटा छोड़ गया है। हादसे की सूचना मिलते ही पंजाब से परिजन महेंद्रगढ़ पहुंच गए। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। सदर थाना एसएचओ का कहना है कि हादसे के सही कारणों की जांच की जा रही है। प्रारंभिक जांच में चालक की लापरवाही और तेज रफ्तार को कारण माना जा रहा है। घायल चालक का ईलाज चल रहा है।

महेंद्रगढ़। कार्रवाई में जुटी पुलिस की टीम। फोटो : हरिभूमि

महेंद्रगढ़। हादसे के बाद मौके पर खड़ा ट्रक। फोटो : हरिभूमि

# कनीना नगर पालिका में एफसीसी का चुनाव कल

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

नगर पालिका कार्यालय में 11 अगस्त को सुबह 11 बजे एफसीसी यानी फाइनेंस कांटेक्ट कमेटी का चुनाव किया जाएगा। इस बारे में नपा सचिव कपिल कुमार ने बताया कि डीएमसी रणवीर सिंह व नपा चेयरपर्सन डॉ. रिंपी लोढ़ा के दिशानिर्देशन में होने वाले चुनाव की सभी तैयारियां पूरी की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि एफसीसी कमेटी में छह सदस्य होते हैं। जिनमें चेयरपर्सन, सचिव, एमई, वाइस चेयरमैन के अलावा दो पार्षद शामिल होते हैं। वाइस चेयरमैन का चुनाव अभी तक नहीं हो सका है। एफसीसी कमेटी के लिए दो पार्षदों का चुनाव किया जाना है। कमेटी के गठन के बाद नपा क्षेत्र में 50 लाख रुपये तक के विकास कार्य कराए जा सकेंगे। उन्होंने बताया कि कमेटी गठन का एजेंडा सभी पार्षदों सहित क्षेत्र के सांसद चैधरी धर्मबीर सिंह, स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव, जिला नगर आयुक्त को भेज दिया गया है। चुनाव को शांतिपूर्वक तरीके से करवाने के लिए उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक, डीएसपी व एसडीएम को पत्र लिखा गया है। चुनाव में चेयरपर्सन व 14 वार्ड पार्षद हिस्सा लेंगे। सर्वसम्मति से चयन न होने की स्थिति में बैलेट पेपर से चुनाव कराए जाएंगे। कमेटी गठन के बाद नगर में विकास कार्य करवाने का रास्ता साफ होगा।

नारनौल। आर्य समाज पदाधिकारियों को पौधा भेंट करती डॉ. कृष्णा आर्या।

# सैद अलीपुर में श्रावणी लोकपर्व पर समाजसेवियों को बांधे रक्षा सूत्र

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

समाज नांगल चौधरी के तत्वावधान में गांव सैद अलीपुर में श्रावणी उत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें आर्य समाज के प्रबुद्ध उपदेशक, सदस्य, ग्रामीण व भारी संख्या में मातृशक्ति उपस्थित रही। कार्यक्रम में आर्य समाज की प्रखर वक्ता व उपदेशिका डॉ. कृष्णा आर्या ने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का संदेश दिया और समाजसेवियों को रक्षा सूत्र बांधे।

उन्होंने बताया कि रक्षाबन्धन व जन्माष्टमी जैसे त्योहारों पर हमें स्त्री सशक्तिकरण, नारी सम्मान व प्रकृति संरक्षण की बात करनी चाहिए और महिलाओं का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि रक्षाबन्धन श्रावणी पर पर हमें राष्ट्र रक्षा के साथ जल व प्रकृति संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। पर्यावरणविद डॉ. कृष्णा आर्या ने आर्य समाज पदाधिकारियों को पौधा भेंट किया व ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने का संकल्प दिलाया।

इस मौके पर वासुदेव यादव, स्वामी यशदेव, विरेन्द्र सिंह प्रधान, महात्मा राधेश्याम प्रधान, करणसिंह प्रवक्ता, धर्मवीर आर्य, परमानंद दीवान, वेदप्रकाश आर्य, महाशय नंदराम, रामकृष्ण शास्त्री, स्वामी हंसमुनि, राजपाल नेताजी, देशपाल सरपंच, अमरसिंह सरपंच, अमरसिंह महरानिया, जयबीर, वेदप्रकाश, हरदयाल, वेदप्रिय, राजेन्द्र तूफान आदि उपस्थित रहे।

# जिलेभर में रही रक्षाबंधन पर्व की धूम, उमड़ी भारी भीड़

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

भाई बहन के बीच अटूट रिश्ते का पर्व रक्षाबंधन शनिवार को जिलेभर में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बहनों ने भाई की कलाई पर अटूट रिश्ते की डोर बांधी व भाई को तिलक लगाकर मुंह मीठा करवाया, साथ ही उनके दीर्घायु की कामना भी की। भाइयों ने बहनों को उपहार दिए। पर्व को लेकर उल्लास का माहौल रहा।

रक्षाबंधन को लेकर बाजार में खरीदारी करने भीड़ उमड़ पड़ी। सुबह से ही बाजारों काफी चहल पहल रही। पूजा अर्चना हुई, इसके बाद बहनों ने भाइयों के हाथों में रक्षा सूत्र बांधकर उनके माथे पर तिलक लगाकर दीर्घायु की कामना की। बहनों ने अपने भाईयों का मुंह मीठा करवाया। बदले में भाईयों ने बहनों को उपहार आदि भेंट किए, साथ ही बहनों की सुरक्षा का संकल्प लिया। सुबह से ही मिठाई व राखी की दुकानों पर भीड़ लग गई थी। स्थिति यह रही कि प्रमुख दुकानों की मिठाई शाम तक खत्म हो गई। इसके अलावा बच्चों में भी रक्षाबंधन का उल्लास देखने को मिला।

नारनौल। रक्षाबंधन पर्व मनाते बच्चे। फोटो : हरिभूमि

***रक्षाबंधन पर्व पर यात्रियों की सुविधा हेतु स्पेशल रेलसेवाओं का संचालन:*** उत्तर पश्चिम रेलवे की ओर से रक्षाबंधन पर्व पर अतिरिक्त यात्री यातायात को ध्यान में रखते हुए यात्रियों की सुविधा हेतु स्पेशल रेलसेवाओं का संचालन किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी शशि किरण के अनुसार गाड़ी संख्या 09639 मदार रोहतक स्पेशल प्रतिदिन रेलसेवा 10 अगस्त तक तीन ट्रिप मदार से 04:30 बजे रवाना होकर 12:50 बजे रोहतक पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 09640 रोहतक मदार स्पेशल रेलसेवा 10 अगस्त तक तीन ट्रिप रोहतक से 13:20 बजे रवाना होकर 22:35 बजे मदार पहुंचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में किशनगढ़, नरेना, फुलेरा, रेनवाल, बधाल, रींगस, श्रीमाधोपुर, कावंट, भगेगा, नीम का थाना, मांवडा, डाबला, निजामपुर, नारनौल, अटेली, कुण्ड, रेवाड़ी, गोकलगढ़, झज्जर व अस्थल बोहर स्टेशनों पर ठहराव करेगी।

### फुलेरा-रेवाड़ी-फुलेरा रक्षाबंधन स्पेशल रेलसेवा

फुलेरा-रेवाड़ी रक्षाबंधन स्पेशल रेलसेवा 10 व 11 को फुलेरा से 14:30 बजे रवाना होकर 19:00 बजे रेवाड़ी पहुंचेगी। इसी प्रकार रेवाड़ी-फुलेरा रक्षाबंधन स्पेशल रेलसेवा 10 व 11 को रेवाड़ी से 20:20 बजे रवाना होकर रात्रि 01:05 बजे फुलेरा पहुंचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में रेनवाल, रींगस, श्रीमाधोपुर, कांवट, नीम का थाना, मावंडा, डाबला, नारनौल व अटेली स्टेशनों पर ठहराव करेगी। इस रेलसेवा में 13 साधारण श्रेणी व दो गार्ड डिब्बों सहित कुल 15 डिब्बें होंगे।

# बीपीएल राशन कार्ड धारकों के लिए फेस केवाईसी अनिवार्य, घर बैठे 'मेरा केवाईसी' ऐप से करें प्रक्रिया

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

प्रदेश सरकार ने गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले 46 लाख से अधिक परिवारों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। अब सभी बीपीएल राशन कार्ड धारकों को अपनी पहचान सुनिश्चित करने के लिए आधार फेस केवाईसी करना अनिवार्य होगा।

इस कदम का मुख्य उद्देश्य अपात्र लोगों द्वारा राशन का लाभ लेना रोकना और फर्जीवाड़े पर लगाम लगाना है। इस समय जिले में 167493 बीपीएल धारक परिवार योजना का लाभ उठा रहे है।

प्रदेश में परिवार पहचान पत्र योजना के लागू होने के बाद साल 2021 से राशन कार्डों को इससे जोड़ा गया था। इससे बीपीएल परिवारों की संख्या में अचानक बढ़ोतरी हुई। सरकार ने मार्च में गलत तरीके से बने बीपीएल कार्डों को वापस करने का आदेश दिया था लेकिन इसमें कोई खास कमी नहीं दिखी। इसके अलावा जिन परिवारों के पास चार पहिया वाहन थे उनके कार्ड हाल ही में काटे गए थे हालांकि इसमें कुछ गलतियाँ भी सामने आई, जिससे नागरिकों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

### फेस मिलान तकनीक का इस्तेमाल करने की योजना

अब सरकार ने फेस केवाईसी की प्रक्रिया शुरू की है जिससे एक से अधिक जगहों से राशन लेने वाले या अपात्र लोगों पर रोक लगाई जा सकेगी। इसके साथ ही भविष्य में राशन वितरण के लिए फिंगरप्रिंट की जगह फेस मिलान तकनीक का इस्तेमाल करने की भी योजना है। नागरिकों को केवाईसी कराने के लिए कॉमन सर्विस सेंटर या साइबर कैफे के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है जिससे उन पर आर्थिक बोझ पड़ता है। जिन परिवारों के पास एंड्रॉइड स्मार्टफोन है वे 'मेरा केवाईसी' ऐप डाउनलोड करके घर बैठे आसानी से यह प्रक्रिया पूरी कर सकते है। यह खासकर बुजुर्गों के लिए फायदेमंद है जिन्हें कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। फेस केवाईसी करते समय यह ध्यान रखें कि आपके आधार कार्ड में लगी हुई फोटो हाल की हो ताकि मिलान सही से हो सके।

तय कर सही स्कीम में निवेश करने से मिलेगा फायदा | म्यूचुअल फंड और गोल्ड निवेश करके बड़ा फंड तैयार करें | अपनी पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें, विविधता रखें

# प्लानिंग बनाकर करें निवेश, 10 साल में बन सकते हैं करोड़पति

**निवेश मंत्रा**
बिजनेस डेस्क

जब भी बात करोड़पति बनने की आती है तो ऐसा लगता है कि यह बहुत मुश्किल है। काफी लोग एक लाख रुपये महीने की सैलरी होने के बावजूद एक करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा नहीं कर पाते हैं। हालांकि यह प्लानिंग के साथ निवेश किया जाए तो यह कुछ मुमकिन है। आप सही प्लानिंग के जरिए निवेश करके मात्र 10 साल में ही करोड़पति बन सकते हैं। अगर आपकी उम्र 35 साल है और आप अगले 10-12 सालों में 1 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहते हैं, तो ये जानकारी आपके लिए काफी अहम हो सकती है।

जानकारों के अनुसार म्यूचुअल फंड और गोल्ड आदि जगह निवेश करके बड़ा फंड तैयारी किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड का रिटर्न शेयर मार्केट के प्रदर्शन पर निर्भर करता है। जानकारों के मुताबिक पूरी रकम एक ही जगह निवेश न करें। पोर्टफोलियो में विविधता होनी चाहिए। एक्सपर्ट के अनुसार करोड़पति बनने के लिए जल्द से जल्द निवेश शुरू कर देना चाहिए। अगर कोई शख्स 35 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है तो वह 10 से 12 साल में करोड़पति बन सकता है। हालांकि इस दौरान निवेश में रिस्क लेना भी जरूरी होगा। इसके लिए कुछ रिश्क लें और लंबी अवधि के निवेश का प्लान तैयार कर आगे बढ़ें। इससे आप आसानी से करोड़पति बना पाएंगे और अपने धन से भविष्य को सुरक्षित कर पाएंगे। एक्सपर्ट कहते हैं कि कम जोखिम वाले निवेश से बहुत ज्यादा रिटर्न की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, लार्जकैप स्कीम्स ने पिछले पांच सालों में 14.02% का रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आप कम जोखिम लेंगे, तो आपको रिटर्न भी थोड़ा कम मिलेगा।

*सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।*

### कहां करें निवेश

आप अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर निवेश कर सकते हैं। जैसे कि 20% ग्रोथ वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% वैल्यू वाले फ्लेक्सी कैप फंड में, 20% कॉन्ट्रा फंड में, 20% ग्रोथ वाले मिडकैप फंड में और 20% ग्रोथ वाले स्मॉल कैप फंड में निवेश कर सकते हैं। इस तरह से निवेश करने से आप अलग-अलग मार्केट कैप और स्टाइल में निवेश कर पाएंगे। इससे आपके पैसे के डूबने का खतरा कम होगा और आपको अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

### करोड़पति बनने के लिए कितना निवेश करें

अगर आप 10 साल में 12% सीएजीआर (कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट) के साथ 1 करोड़ रुपये का फंड तैयार करना चाहते हैं, तो आपको हर महीने 45,000 रुपये एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करनी होगी। वहीं, 12 साल में करोड़पति बनना चाहते हैं तो यह निवेश 35,000 रुपये महीने का होगा। हालांकि 10 से 12 साल बाद एक करोड़ रुपये की वैल्यू कम हो जाएगी। इसलिए एक्सपर्ट कहते हैं कि हर साल एसआईपी की रकम 5 से 10 फीसदी बढ़ाते जाएं।

### गोल्ड कितना जरूरी

सोने में निवेश को लेकर अलग-अलग एक्सपर्ट की राय अलग-अलग है। कुछ जानकार सोने में निवेश को अच्छा मानते हैं तो कई का कहना है कि इसमें रिटर्न कोई फिक्स नहीं है। इतिहास में ऐसे कई मौके आए हैं जब सोने ने नेगेटिव रिटर्न दिया है। यानी इसने निवेशकों का नुकसान किया है। वहीं कई बार पॉजिटिव रिटर्न न के बराबर रहा है।

### ऐसे करें निवेश की प्लानिंग

**चरण 1 : वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण**

1. **लक्ष्यों की पहचान:** अपने वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करें, जैसे कि रिटायरमेंट के लिए बचत, बच्चों की शिक्षा, या घर खरीदना।
2. **लक्ष्यों की प्राथमिकता:** अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता दें और उनकी समय सीमा निर्धारित करें।

**चरण 2 : जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन**

1. **जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन:** अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें और यह निर्धारित करें कि आप कितना जोखिम उठाने को तैयार हैं।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

**चरण 3 : निवेश विकल्पों का चयन**

1. **निवेश विकल्पों की जानकारी:** विभिन्न निवेश विकल्पों की जानकारी प्राप्त करें, जैसे कि स्टॉक, म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, और बॉन्ड।
2. **निवेश विकल्पों का चयन:** वित्तीय लक्ष्यों व जोखिम सहनशक्ति के अनुसार निवेश विकल्पों का चयन करें।

**चरण 4 : निवेश योजना का निर्माण**

1. **निवेश योजना का निर्माण:** अपने वित्तीय लक्ष्यों और निवेश विकल्पों के अनुसार योजना बनाएं।
2. **निवेश की राशि:** निवेश की राशि निर्धारित करें और नियमित निवेश करने का निर्णय लें।

**चरण 5 : निवेश की निगरानी और समीक्षा**

1. **निवेश की निगरानी:** अपने निवेश की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार बदलाव करें।
2. **निवेश की समीक्षा:** यह सुनिश्चित करें कि लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं।

**अतिरिक्त सुझाव**

1. **विविधीकरण :** अपने निवेश को विविध बनाएं और एक ही निवेश विकल्प में अधिक जोखिम न उठाएं।
2. **नियमित निवेश :** नियमित निवेश करने से आपके निवेश की राशि बढ़ सकती है।

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड

## चढ़ते और गिरते दोनों शेयरों पर दांव लगाने का मौका

**काम की बात**
बिजनेस डेस्क

स्पेशियलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) गिरते बाजार में भी पैसे कमाने का मौका देता है। लेकिन, यह फंड कमजोर दिल वाले इनवेस्टर्स के लिए नहीं है। हाल में सेबी ने एसआईएफ की नई कैटेगरी शुरू की थी। क्वांट इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट फंड (क्यूएसआईएफ) इस कैटेगरी का इंडिया का पहला फंड है। यह इनवेस्टमेंट के लिए हेज-फंड स्टाइल की स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। इसका मतलब है कि यह एक ही समय में लॉन्ग पोजीशन और शॉर्ट पोजीशन या इसके ऑपोजिट पोजीशन लेने की इजाजत देता है। यह म्यूचुअल फंड के फ्रेमवर्क के तहत आता है। इसका मतलब है कि इस पर रेगुलेटर की नजर रहती है। यह इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा का भी ध्यान रखता है। उतारचढ़ाव वाले बाजार में शॉर्टिंग से मुनाफा कमाने की गुंजाइश होती है। क्वांट म्यूचुअल फंड के फाउंडर और सीआईओ संदीप टंडन ने कहा, ₹अगर आपके पास स्ट्रॉन्ग रिसर्च है, अच्छा एनालिटिक्स है और सॉलिड माइक्रो व्यू है तो शॉर्टिंग से आप मार्केट में दोनों तरह की स्थितियों में पैसे कमा सकते हैं। आपको स्टॉक के चढ़ने का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। गिरते स्टॉक्स से मुनाफा कमाना सेबी के फ्रेमवर्क के तहत लीगल है। यह उन इनवेस्टर्स के लिए अहम टूल है जो इसके इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।

### यह किस स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है

यह फंड लॉन्ग-शॉर्ट स्ट्रेटेजी का इस्तेमाल करता है। यह ऐसे स्टॉक्स को खरीदता है, जिनकी कीमतें चढ़ने की उम्मीद होती है और साथ ही उन स्टॉक्स को शॉर्ट करता है जिनकी कीमतें गिरने के आसार होते हैं। इस स्ट्रेटेजी की वजह से मार्केट किसी भी दिशा में जाए इनवेस्टर्स को मुनाफा होता है। गिरने वाले और चढ़ने वाले शेयरों की पहचान फंड मैनेजर करता है। इसके लिए फंडामेंटल और टेक्निकल एनालिसिस का इस्तेमाल होता है।

### टैक्स के कौन से नियम लागू होते हैं

टैक्स के मामले में एसआईएफ पर म्यूचुअल फंड्स के नियम लागू होते हैं। इस वजह से यह एआईएफ या पीएमएस के मुकाबले ज्यादा फायदेमंद हो जाता है। सहजमनी के फाउंडर और चीफ इनवेस्टमेंट एडवाइजर अभिषेक कुमार ने कहा, क्यूएसआईएफ जैसे इक्विटी ओरिएंटेड एसआईएफ के शॉर्ट टर्म गेंस पर 20 फीसदी टैक्स लगता है, जबकि लॉन्ग टर्म गेंस पर 12.5 फीसदी टैक्स लगता है। एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपये का गेंस टैक्स-फ्री है।

### न्यूनतम इनवेस्टमेंट कितना है

एसआईएफ में कम से कम 10 लाख रुपये का निवेश जरूरी है। यह पीएमएस में न्यूनतम 50 लाख रुपये और एआईएफ में न्यूनतम 1 करोड़ रुपये के निवश के मुकाबले कम है। सैंक्टम वेल्थ में इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स के हेड अलख यादव ने कहा कि न्यूनतम निवेश कम होने से यह ज्यादा इनवेस्टर्स के दायरे में आ जाता है। इसके अलावा चूंकि यह सेबी के नियम और कानून के तहत ऑपरेट होता है, जिससे इस पर रेगुलेटर की नजर बनी रहती है। इससे इनवेस्टर्स के हितों की सुरक्षा होती है।

### क्या आपको इनवेस्ट करना चाहिए?

एसआईएफ का इस्तेमाल इनवेस्टर को अपने सैटेलाइट पोर्टफोलियो की तरह करना चाहिए न कि कोर पोर्टफोलियो के एक हिस्से के रूप में। अगर कोई स्मार्ट इवेस्टर रिस्क और रिटर्न को बैलेंस करना चाहता है तो वह कुछ पैसा एसआईएफ में लगा सकता है। अगर वह 50 रुपये म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहता है तो वह इसमें से 15 रुपये एसआईएफ में लगा सकता है। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में कुल निवेश का 30 फीसदी वह एसआईएफ में इनवेस्ट कर सकता है।

### क्या है एसआईएफ

स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) एक नया निवेश विकल्प है जो म्यूचुअल फंड और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विस (पीएमएस) के बीच का ऑप्शन है। यह निवेशकों को अधिक जोखिम लेने और विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग करने की अनुमति देता है, जैसे कि लॉन्ग-शॉर्ट फंड। एसआईएफ में निवेश करने के लिए कम से कम 10 लाख की आवश्यकता होती है।

### एसआईएफ की विशेषताएं

- लॉन्ग-शॉर्ट फंड : एसआईएफ में निवेशक दोनों तरह के स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं, जिससे जोखिम कम करने और बेहतर लाभ पाने का मौका मिलता है।
- अधिक जोखिम : एसआईएफ में निवेश करने वाले निवेशकों को अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे अधिक रिटर्न भी मिल सकता है।
- टैक्स लाभ : एसआईएफ में टैक्स की व्यवस्था म्यूचुअल फंड जैसी ही है, जो निवेशकों के लिए फायदेमंद हो सकती है।

### एसआईएफ में निवेश करने के लाभ

- अधिक फ्लेक्सिबिलिटी : एसआईएफ में निवेशक विभिन्न निवेश रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं और अपने निवेश को अधिक फ्लेक्सिबल बना सकते हैं।
- अधिक रिटर्न : एसआईएफ में निवेश करने से अधिक रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए अधिक जोखिम उठाने की आवश्यकता होती है।

### कौन से फंड कर रहे हैं हाउस एसआईएफ लॉन्च

- क्वांट म्यूचुअल फंड : क्वांट म्यूचुअल फंड ने भारत का पहला लॉन्ग-शॉर्ट एसआईएफ फंड लॉन्च करने की मंजूरी प्राप्त की है।
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल : आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल भी अपना एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।
- एसबीआई म्यूचुअल फंड : एसबीआई म्यूचुअल फंड भी एसआईएफ फंड लॉन्च करने की तैयारी कर रही है।

- **फाइनेंशियल सफलता की पहली सीढ़ी है खर्चों पर रोक लगाना और भविष्य के लिए आय का 20 फीसदी बचाना**
- **अपने मंथली बिलों व खर्चों को कम कर बचा सकते हैं पैसे**
- **अपने बचे हुए पैसे को सही जगह निवेश करें, बढ़ेगा पैसा**

पैसों का करें बेहतर मैनेजमेंट, नहीं होंगे परेशान

## सैलरी को 'दीमक' की तरह खा जाते हैं बिल

**निवेश मंत्रा**
बिजनेस डेस्क

अक्सर लोगों को लगता है कि फाइनेंशियल रूप से मजबूत या फिर सफलता का मतलब बहुत ज्यादा पैसा कमाना है, लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं होता है। असल में फाइनेंशियल सफलता की पहली और सबसे अहम सीढ़ी है अपने खर्चों पर रोक लगाना। जब आप अपने मंथली बिलों और खर्चों को कम करते हैं, तो फिर आपके पास बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए अधिक पैसा बचता है। तभी आप अपने पैसे को बढ़ा पाते हैं। असल में यह कोई मुश्किल काम नहीं है, जी हां कुछ आसान और सुनियोजित कदम उठाकर आप अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं और एक मजबूत वित्तीय फ्यूचर की नींव रख सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ टिप्स जो अपको आर्थिक सफलता की ओर ले जाएंगे।

### पहला कदम : अपने खर्चों को पहचानें

सबसे पहले, आपको यह जानना होगा कि आपकी मेहनत की कमाई का पैसा कहां जा रहा है। इसके लिए, आप कम से कम एक महीने तक अपने हर छोटे-बड़े खर्च का हिसाब रखें। अपने सभी खर्चों को एक कॉपी में या मोबाइल ऐप में लिखें। इसमें किराए, किराने का सामान, ईएमआई, बिजली बिल से लेकर एक कप चाय का खर्च भी शामिल करें। यह कदम आपको यह समझने में हेल्प कर सकता है कि आप कहां-कहां फिजूलखर्ची कर रहे हैं।

### दूसरा कदम बजट बनाएं

एक बात साफ है कि जब आप अपने खर्चों को पहचान लेंगे, तो अगला कदम होगा एक मासिक बजट बनाना है। अपनी इनकम के हिसाब से हर चीज के लिए एक लिमिट तय करें. बजट बनाने से आपको अपने खर्चों को कंट्रोल करने में मदद मिल सकेगी। अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें।

**अहम खर्चे :** किराया, ईएमआई, राशन, दवाई आदि।

**गैर-जरूरी खर्चे :** बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग, मनोरंजन आदि।

### तीसरा कदम : गैर-जरूरी खर्चों में कटौती

अधिक पैसा बचाने के लिए अपने गैर-जरूरी खर्चों में कटौती करें। इससे आपको हर महीने पैसे बचने लगेंगे। इस पैसे को आप अच्छी जगह पर निवेश करें। धीरे धीरे इस निवेश औश्र अचत को बढ़ाते जाएंगा। इससे आपके हाथों में अधिक पैसा आएगा और आपकी बचत बढ़ती जाएगी। आप इन खर्चों में कर सकते हैं कटौती।

**मनोरंजन :** कई ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के सब्सक्रिप्शन लेने के बजाय, केवल एक या दो का ही यूज करें।

**खान-पान :** बाहर से खाना ऑर्डर करने की जगह, घर पर खाना बनाने की आदत डालें। इससे आपके पैसे और हेल्थ दोनों बचेंगे।

**शॉपिंग :** अनावश्यक और आवेगपूर्ण खरीदारी से बचें। जब कोई चीज जरूरी हो तभी खरीदें।

### चौथा कदम : बड़े बिलों को कम करें

आपको अपनी बचत बढ़ाने के लिए अपने सबसे बड़े मासिक बिलों को कम करने के तरीके खोजने होंगे या कमाई को बढ़ाना होगा। कोई भी पार्टटाइम काम करें। फीलॉन्सिंग भी कर सकते हैं। इससे आपको पैसे बचेंगे। बिजली का बिल ज्यादा है। गैर जरूरी उपकरणों को बंद कर दें। घर लाइट उतनी ही जलाएं, जितनी जरूरत हो। कुछ बिलों में ऐसे कर सकते हैं कटौती।

**बिजली बिल :** घर में एलईडी लाइट का यूज करें, पुराने और ज्यादा बिजली खाने वाले उपकरणों को बदलें और जरूरत न होने पर पंखे, एसी और लाइट बंद करें।

**फोन और इंटरनेट :** अपने फोन और इंटरनेट प्लान की तुलना करें। कई बार, कंपनियां बेहतर ऑफर दे रही होती हैं, जिनसे आपका बिल कम हो सकता है।

**लोन की ईएमआई :** अगर आपके पास पुराना लोन है, तो उसकी ब्याज दर को कम करने के लिए बैंकों से बात करें।

### पांचवां कदम : बचत को प्राथमिकता दें

अपने मंथली खर्चों को कम करने के बाद, जो भी पैसा बचे उसे तुरंत बचत और इन्वेस्टमेंट में लगाएं। 'खुद को पहले भुगतान करें' के रूल को अपनाएं।

इसका मतलब है कि सैलरी आने पर सबसे पहले बचत और इन्वेस्टमेंट के लिए पैसा निकालें, फिर बाकी बचे पैसों से खर्च करें। इससे साफ है कि मंथली बिलों को कम करना एक आदत है, जिसे लगातार कोशिश से अपनाया जा सकता है। यह कोई बड़ा काम नहीं होता है, बल्कि छोटे-छोटे कदमों का एक बड़ा रूप होता है। इन कुछ कदमों को उठाकर आप ना केवल अपने मंथली खर्चों को कम कर सकते हैं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्यों को भी हासिल कर सकते हैं और एक सेफ फ्यूचर की नींव रख सकते हैं।

स्टूडेंट लाइफ में फाइनेंशियल मैनेजमेंट घटा सकता है परेशानी, बजट बनाकर फ्यूचर प्लानिंग भी छात्रों के लिए बेहतर

इन्हें अपनाने से कम पैसों में भी जी सकते हैं बॉस वाली जिंदगी

## स्टूडेंट लाइफ में करें मनी मैनेजमेंट, भविष्य में धन की नहीं रहेगी कमी, अमीर बनने के लिए हर छात्र कुछ अहम टिप्स को अपनाएं

**प्लानिंग**
बिजनेस डेस्क

विद्यार्थी लाइफ अक्सर उत्साह, सीखने और नए अनुभवों से भरा होती है, लेकिन इसी दौरान पैसों का मैनेजमेंट बहुत बड़ी चुनौती भी साबित हो सकता है। कॉलेज की फीस, किताबों का खर्च, हॉस्टल का किराया, खाना-पीना, और मनोरंजन के खर्चे इन सभी को मैनेज करना कभी बार मुश्किल हो जाता है, लेकिन अगर स्टूडेंट टाइम में ही बजट बनाना और पैसों का सही मैनेजमेंट सीख लिया जाए तो फ्यूचर आर्थिक परेशानियों से बच सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि छात्रों को शुरू से ही मनी मैनेजमेंट पर ध्यान देना चाहिए ताकि भविष्य की दिक्कतों से दूर रहा जा सके और छात्र आसानी से धनवान बन सकें। अच्छी फाइनेंशियल आदतें न केवल आपको कर्ज के जाल में फंसने से बचाती हैं, बल्कि आपको अपने टारगेट को प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपको धनवान बना सकते हैं।

*स्टूडेंट लाइफ में सेविंग्स की आदत डालना फ्यूचर के लिए सबसे मजबूत नींव हो सकती है। सेविंग्स को कभी भी जो बचेगा, वही बचाऊंगा की सोच से ना देखें, बल्कि इसे अपनी प्रायोरिटी बनाएं। छोटे-बड़े बचत लक्ष्य तय करें। जब कोई टारगेट तय होता है तो बचत करना आसान और प्रेरणादायक लगता है। हमेशा ट्राई करें कि आपकी आय का 10% या 20% हिस्सा सीधे बचत खाते में डालें।*

### अपनी इनकम को ट्रैक करें

हर छात्र को अपने फाइनेंशियल लाइफ की शुरुआत सबसे पहले अपनी इनकम और खर्चों को ट्रैक करना चाहिए। चाहे पॉकेट मनी हो, स्कॉलरशिप या पार्ट-टाइम जॉब की आमदनी हो, सबका हिसाब रखना जरूरी होता है। इसके लिए आप एक छोटी डायरी, कोई बजटिंग ऐप या एक्सेल शीट का सहारा ले सकते हैं। स्टूडेंट रोजमर्रा के छोटे-छोटे खर्च जैसे स्नैक्स, ऑटो किराया या ऑनलाइन सब्सक्रिप्शन को भी मेंशन करें। यह आदत आपको अपनी फिजूलखर्ची समझने और उसे नियंत्रित करने में मदद करेगी, जिससे पैसों की बचत हो सकेगी।

### आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझें

अपने खर्चों को दो पार्ट में बांटें-स्टूडेंट लाइफ में आर्थिक समझ को समझना बेहद जरूरी है, और इसकी शुरुआत होती है 'आवश्यकताओं' और 'इच्छाओं' के फर्क को समझने से। आवश्यकताएं वो खर्चे होते हैं जो लाइफ के लिए जरूरी हैं-जैसे ट्यूशन फीस, किताबें, रूम रेंट, खाना और आना-जाना, जबकि, इच्छाएं वो चीजें हैं जो केवल सुख-सुविधा के लिए होती हैं, जैसे बाहर खाना, फिल्म देखना या नया गैजेट खरीदना, तो जब आप इन दोनों के बीच फर्क पहचान लेंगे, तो आप अपनी जरूरत पर फोकस करके जरूरी खर्चों पर लगाम लगाकर बेहतर फाइनेंशियल कंट्रोल बना सकते हैं।

### 50/30/20 का बजट बनाएं

अपनी इनकम और खर्चों को समझने के बाद अगला जरूरी कदम है एक सही मंथली बजट बनाया जाए। आप अपनी मासिक आय के अनुसार भोजन, कन्वेंशन, पढ़ाई की चीजें और मनोरंजन जैसी लिस्ट के लिए अलग-अलग पैसे तय करें। यह ध्यान रखें कि आपके कुल खर्च आपकी कुल आमदनी से अधिक ना हों। बजट बनाने के लिए आप 50/30/20 रूल का पालन कर सकते हैं, जैसे 50% राशि आवश्यकताओं पर, 30% इच्छाओं पर और 20% सेविंग्स या किसी भी लोन की चुकौती के लिए रखें।

### स्मार्ट खरीदारी करें और रियायतों का लाभ उठाएं

पैसों की बचत के लिए रियायतों और डील्स का समझदारी से यूज करना बेहद फायदेमंद हो सकता है। जहां तक हो हमेशा अपने स्टूडेंट आईडी कार्ड को साथ रखें और **wherever possible** उसे दिखाकर छूट पाने की कोशिश कर सकते हैं। आप किराने का सामान थोक में खरीदें और ऑफर्स या सेल पर नजर रखना चाहिए, इतना ही नहीं महंगे ब्रांड्स की बजाय सामान्य ब्रांड चुनना अधिक बजट-फ्रेंडली होता है।

### एक्स्ट्रा इनकम के ऑप्शन खोजें

अगर आपका बजट लिमिटेड है तो खर्चों पर नियंत्रण के साथ-साथ इनकम बढ़ाने के ऑप्शन ढूंढें। आप पार्ट-टाइम जॉब जैसे ट्यूटरिंग, कैंपस असिस्टेंटशिप या फ्रीलांसिंग का ऑप्शन चुन सकते हैं। साथ ही आपकी हॉबी भी कमाई का जरिया बन सकती है—जैसे ऑनलाइन कंटेंट बनाना, हैंडमेड क्राफ्ट्स बेचना या ब्लॉगिंग करना।

### इमरजेंसी फंड बनाएं

अचानक आने वाले खर्चों के लिए हमेशा तैयार रहना बहुत जरूरी है, क्योंकि मेडिकल इमरजेंसी, लैपटॉप खराब होना या कोई भी अचानक से कोई भी खर्चे सामने आ सकते हैं। इसके लिए आप एक अलग बचत खाता खोलकर उसमें धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा करें। ऐसा करने से आपको महंगे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। छात्र बजट बनाना, खर्चों की प्राथमिकता तय करना और हर महीने की सेविंग्स तय करना सीखकर फाइनेंशियल मैनेजमेंट की शुरुआत कर सकते हैं।

## खबर संक्षेप

### यदुवंशी के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

**चरखी दादरी।** यदुवंशी शिक्षा निकेतन मंदौला के खिलाड़ियों ने ब्लॉक स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय प्राचार्य नरेंद्र यादव और चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने खेल भावना, मेहनत और लगन का परिचय देते हुए कई पदक अपने नाम किए। अंडर 19 शॉटपुट प्रतियोगिता में अभिमन्यु सांगवान ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

### बाइक सवार युवकों पर गाड़ी चढाने का आरोप

**बहल।** भोजन मार्ग पर बाइक सवार दो युवकों पर पिकअप चढ़ाने व लाठी-डंडों से हमला का आरोप है। जिसमें दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने 8 नामजद कर 5-6 अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया है। वार्ड 9 वासी पीड़ित विक्रम 5 अगस्त की शाम महेश अपनी बाइक पर खेत से लौट रहे थे। निर्णाधीन पशु अस्पताल के पास पिकअप ने बाइक को टक्कर मारी व हमला कर दिया।

### तिरंगा देश की आन, बान व शान का प्रतीक

**भिवानी।** तिरंगा देश की आन, बान और शान है, हमें इसके सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, यह हमारे देश की आजादी का प्रतीक है, जिसे हमारे देश के शहीदों ने अपने खून से खींचा था, हमें उनकी कुर्बानी को सदैव याद रखना चाहिए। यह बात वैश्य कॉलेज एनएसएस, एनसीसी व सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के संयुक्त कार्यक्रम में कॉलेज प्राचार्य डॉ. सजय गोयल ने कही।

### केएन स्कूल में कल चुनी जाएंगी सांस्कृतिक टीमें

**चरखी दादरी।** स्वतंत्रता दिवस के लिए एसडीएम योगेश सैनी की अध्यक्षता में सांस्कृतिक टीमों का चयन सोमवार 11 अगस्त को किया जाएगा। इसके लिए सुबह 9 बजे के एन स्कूल में जिला का कोई भी शिक्षण संस्थान आ सकता है। कमेटी के सदस्य सचिव एवं डीआईपीआरओ संदीप हुड्डा ने बताया कि 79वें स्वतंत्रता दिवस पर नई अनाज मंडी में जिला स्तरीय कार्यक्रम होगा।

### महिला जन सुनवाई कार्यक्रम कल

**चरखी दादरी।** राष्ट्रीय महिला आयोग सोमवार 11 अगस्त को भिवानी में महिला जनसुनवाई करेगा। महिला आयोग आपके द्वार थीम पर आयोजित कार्यक्रम में चेयरपर्सन विजया महिलाओं की शिकायतों की सुनवाई करेंगी व आवश्यक निर्देश भी देंगी। इसके लिए दादरी,भिवानी में रोहतक के अधिकारियों को भी बुलाया, ताकि महिलाओं की शिकायते मौके पर निपटाई जा सके।

### सद्भावना त्रिवेणी अभियान में रोपित किए 101 पौधे

**भिवानी।** सद्भावना त्रिवेणी रोपण अभियान चला शनिवार को रक्षाबंधन पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए गांव झूप्पाकलां में बाबा श्याम बगीची और पोकरवास के मुक्तिधाम में पौधरोपण किया। हवलदार लोकरण नेहरा ने बाबा श्याम बगीची में 101 पौधे रोपे, जिनमें विभिन्न प्रकार के औषधीय और छायादार पौधे लगाए।

### 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान कार्यक्रम

**तोशाम।** एसडीएम रवि मीणा ने कहा कि 'आजादी का अमृत काल' के तहत आगामी 15 अगस्त 2025 तक पूरे हरियाणा राज्य, जिला सहित तोशाम उपमंडल में हर घर तिरंगा अभियान हर्षोल्लास और गर्व के साथ मनाया जाएगा। इसका उद्देश्य जन-जन में देशभक्ति की भावना का संचार करना है।

### स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियाँ जोरों पर

**तोशाम।** स्वतंत्रता दिवस समारोह 2025 की तैयारियां जोरों पर है। एसडीएम रवि मीणा (आईएएस) ने कहा कि कार्यक्रम राष्ट्रीय पर्व की गरिमा के अनुरूप होने चाहिए और उनमें भारतीय संस्कृति,शौर्य,परंपरा और तकनीकी प्रगति का समावेश स्पष्ट रूप से दिखना चाहिए।

## तोशाम तहसील के सागवान गांव की 2500 एकड़ जमीन जलमग्न

# घग्गर ड्रेन टूटने से हालात हुए बेकाबू गांवों में घुसा पानी, पलायन को मजबूर

गांव के शमशान घाट, पंचायत घर, आंगनवाड़ी केन्द्र, अखाड़ा, जलघर और स्कूल में भरा पानी

हरिभूमि न्यूज ⏭ तोशाम/ भिवानी

तोशाम तहसील के सागवान गांव में भिवानी घग्घर ड्रेन दांग गांव की ओर से टूटने के कारण गांव के हालात बहुत ज्यादा खराब हो गए हैं। जलभराव से गांव में बाढ़ से हालत बने हुए हैं। घग्घर ड्रेन ओवरफ्लो होकर पानी गांव में घुस गया है, जिससे गांव के शमशान घाट, पंचायत घर, आंगनवाड़ी केन्द्र, अखाड़ा के पास और सरकारी स्कूल, जलघर सहित घरों में तीन से चार फुट पानी भर गया। अब पीछे से दरिया की तरह बहाव वाले पानी को पाइप मोटरों से उठाकर तोशाम की तरफ छोड़ा जा रहा है। तेज बहाव से बहुत से घरों में पानी घुस गया है। गांव वालों द्वारा कुछ घरों के पास चारों तरफ बांध लगाकर कुछ हद तक पानी को रोकने का प्रयास किया जा रहा हैं। पीछे से भिवानी घग्घर का पानी अभी भी गांव की तरफ आ रहा है, जो पूरी तरह से बंद नहीं हुआ है। दांगकंला व सागवान की पंचायतें आपसी रजाबंदी से पानी रोकने की कोशिश कर रही हैं। किसान सभा की जिले की पांच सदस्यी टीम जिला प्रधान रामफल देशवाल, उपप्रधान कामरेड ओमप्रकाश, कर्णसिंह जैनावास, रणधीर सांगवान व राजेश मिरान ने गांव का दौरा किया तथा किसानों से मुलाकात की। उन्होंने जिला प्रशासन व सरकार से शीघ्र जलभराव की निकासी करवाने, क्षतिपूर्ति पोर्टल खुलवाने, विशेष गिरदावरी करवाने व किसानों को एक लाख रुपये प्रति एकड़ मुआवजा दिए जाने की मांग की है। इसके साथ गांव को पीने का पानी, पशुओं के लिए चारा, किसानों के बैंक ऋण भुगतान स्थगित करने, ब्याजमाफी, जलभराव से मकानों को हुए नुकसान का मुआवजा देने की मांग की।

**भिवानी।** गांव सागवान के शमशान घाट परिसर में जमा बरसाती पानी।

**भिवानी।** गांव सागवान में घरों व भवनों में घुसा बरसाती पानी। *फोटो : हरिभूमि*

### मंत्री ने दिए पानी निकासी के आदेश, प्रक्रिया धीमी

उन्होंने कहा कि गांव सागवान की 2500 एकड़ जमीन जलमग्न हो गई है। खरीफ फसल पूरी तरह तबाह हो गई, रबी फसल भी नहीं होगी। गांव के सरपंच प्रतिनिधि बलजीत सिंह व पूर्व सरपंच प्रतिनिधि राजपाल सिंह ने कहा कि बापोड़ा बलियाली रोड पर नजदीक निगाणा फीडर ड्रेन पर पानी उठाने के लिए दो बड़ी मोटरें 100 हार्स पावर वाली मोटरें लगाकर निगाणा फीडर की मोटरों को पानी पहुंचाया जाए, तब जाकर सागवान दांग की तरफ पानी रुक सकता है। वहीं राज्य की सिंचाई मन्त्री श्रुति चौधरी ने भी कल गांव का दौरा कर सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र पानी निकासी के आदेश दिए, लेकिन अभी भी पानी निकासी की प्रक्रिया धीमी है।

**भिवानी।** गांव सागवान में घरों में घुसे बरसाती पानी को दिखाते कामरेड ओमप्रकाश व ग्रामीण। *फोटो : हरिभूमि*

**बवानीखेड़ा।** पानी की निकासी की मांग को लेकर नारेबाजी करते हुए।

## निकासी न होने से परेशान लोगों का घरों से पलायन

- जल्द सरकार ने पुख्ता प्रबंध न किए तो आंदोलन के लिए मजबूर

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा कस्बे के वार्ड सख्या सात व स्लम बस्तियों में जमा बारिश के पानी की निकासी न होने से परेशान घरों के परिवारों सहित घरों से पलायन कर दूसरी जगह रहने के लिए मजबुर हो गये है। शासन व प्रशासन ने उनकी कोई सुद ना ली है जिस कारण कस्बा के लोगों ने रोष व्यक्त पानी की निकासी के उचित प्रबंध करवाकर जल्द ही बारिश के पानी की निकासी करवाए जाने की भी मांग की है अन्यथा पानी खड़ा रहा तो भयावह परिणाम हो सकते हैं। कस्बावासी एडवोकेट राजेश सिंधू व धर्मपाल गौरी ने बताया कि कस्बा मे बारिश के पानी की सही ढंग से निकासी न होने तथा कस्बा के छः व सात वार्ड के घरों व वार्ड की स्लम बस्ती में पानी जमा होने की वजह से चहुंओर हाहाकार मचा है, दर्जनों घरों में बरसात का पानी तीन फुट से ज्यादा भर गया मजबुर लोग घरो से पलायन करना पड़ रहा है। रोजी रोटी के लाले पड़े है, तमाम काम धंधे चोपट हो गये है , पशु के लिए चारा तथा उनके लिए व्यवस्था का कोई स्त्रोत ना बचा है।

### नहीं मिली कोई मदद

कुछ ही दूरी पर विधायक का घर है लेकिन आज तक कोई मदद नही की। मोनू, रामभगत, वीरभान, सत्यवान ,अजय ,मनजीत, पंकज, मन्दीप ,सोनू ,साहिल, रवि ,सोनू ,कालिया ,विजय, राजेंद्र, रोहताश ने बताया नपा व प्रशासन ने तुरंत पानी निकासी की व्यवस्था नहीं की तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे। प्राइमरी स्कूल व स्लम बस्ती तथा हांसी भिवानी के पुराना मुख्य मार्ग में पानी जमा है। कस्बा के चारों ओर बुरा हाल है , पानी की निकासी नही हो पा रही है, लोगो को आने जाने तथा जीवन यापन में भारी तकलीफ हो रही है,। काफी कस्बा के गरीब लोगों के घरों में पानी भरने से लोग घर छोड़कर बाहर किराए के मकानों में रहने को विवश हैं।

## शिविर में जांचा शिक्षकों का व्यवहार

- राकवमावि लोहड़ में प्रभावी कक्षा अवलोकन प्रशिक्षण शिविर संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

चिड़ियाघर रोड़ पर स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लोहाड़ में प्रभावी कक्षा अवलोकन शिविर का समापन हुआ। वीरेंद्र नाराजी, उप निदेशक, एससीईआरटी के मार्गदर्शन में, जिला शिक्षा अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी, डाइट प्राचार्य के नेतृत्व में, भिवानी जिले में 04 अगस्त 2025 से 08 अगस्त 2025 तक मिश्रित मोड में प्रभावी कक्षा अवलोकन पर एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ जिसमें जिले के समस्त एबीआरसी और बीआरपी ने भाग लिया। प्रशिक्षण के अंतिम दिन, डाइट भिवानी में नवरत्न पांडेय, आईएफएससी विंग प्रभारी के उल्लेखनीय सहयोग से, प्रवक्ता मोनिका, नीरज सुपर्णा, ओम प्रकाश पंवार, पूजा मंडल, प्रवीण, रीचा, सोनिया, पूनम, हेमलता, नीलम, सुभाष चन्द्र, पूनमदेवी, संतोष मोनिका ने अपनी अपनी अहम भूमिका अदा की। जिसका उद्देश्य मेंटर्स को शिक्षकों के व्यवहार का अवलोकन करने और कक्षा में रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने के कौशल से लैस करना था। इससे छात्रों के लिए सीखने का माहौल बेहतर हो सके। प्रशिक्षण का समापन प्रतिभागियों साझा किए।

**बवानीखेड़ा।** राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लोहाड़ में प्रभावी कक्षा अवलोकन शिविर का समापन में कर्मचारी व अधिकारीगण। *फोटो : हरिभूमि*

### बाइक फिसलने से राखी बांधने आई वृद्धा की मौत

**बवानी खेड़ा।** गांव सुई में अपने भाइयों को राखी बांधने आ रही एक 50 वर्षीय महिला की बाइक फिसलने के चलते गंभीर चोट लगने के कारण मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मृतका बेटे के बयान पर कार्रवाई कर शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। सोंप गांव निवासी मोहन ने बताया कि वह अपनी 50 वर्षीय माता राजपति को बाइक पर लेकर अपने मामा के घर सुई गांव आ रहे थे । सूई गांव में पहुंचे तब अचानक बाइक का टायर फिसल गया। जिसमें उसकी माता निचे गिर गई तथा उसे गंभीर चोटें आई। मोहन ने बताया कि राजपति की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही सुई गांव में मृतक महिला के परिवार में खुशी का माहौल मातम में बदल गया।

## 5 गांवों में बनेंगे उपस्वास्थ्य केंद्र भवन

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

- दो उप स्वास्थ्य केंद्रों का निर्माण कार्य शुरू

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव।

स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि हरियाणा सरकार का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ, समग्र और गुणवत्तापूर्ण बनाना है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा 24 जुलाई को दादरी जिले में पांच नए उप-स्वास्थ्य केंद्र भवनों का शिलान्यास किया। इन भवनों का निर्माण तीन करोड़ 14 लाख रुपये की लागत से किया जाएगा। दादरी जिले के भांडवा, चिड़िया, खेड़ी बुरा, कलियाना और चंदेनी गांवों में बनाएं जाएंगे। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि स्वस्थ गांव, सशक्त समाज अभियान के तहत शुरू की गई यह महत्वाकांक्षी परियोजना ग्रामीणों को अपने ही क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाएगी। इन उपस्वास्थ्य केंद्रों में नियमित टीकाकरण, गर्भवती महिलाओं की देखभाल, निःशुल्क जांच व दवाइयों की सुविधा, आकस्मिक प्राथमिक उपचार और रेफरल सेवाएं जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। इससे समय रहते बीमारियों की पहचान करने से उनकी रोकथाम में मदद मिलेगी।

### नैतिक जिम्मेदारी

आरती सिंह राव ने कहा कि गांवों में स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाना हमारी नैतिक और प्रशासनिक जिम्मेदारी है। इन केंद्रों से हजारों ग्रामीणों को लाभ मिलेगा। यह पहल केवल स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि एक स्वस्थ, आत्मनिर्भर और जागरूक समाज के निर्माण की दिशा में ठोस कदम है।

### दो पर काम शुरू

मंत्री आरती राव बताया कि कलियाना और चंदेनी गांवों में पुराने भवनों की जगह नए भवनों का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। शेष तीन भवनों का कार्य भी शीघ्र शुरू किया जाएगा, ताकि ग्रामीणों को जल्द से जल्द इन सुविधाओं का लाभ मिल सके।

## छात्राओं ने प्रतियोगिताओं में दिखाई अपनी प्रतिभा

- राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में हुई ललित कला प्रतियोगिताएं

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

राजीव गांधी महिला कॉलेज में प्राचार्य त्रिलोकचंद की अध्यक्षता में ललित कला विभाग के तत्वावधान में संयोजक प्रोफेसर सतविंद्र चौहान व प्रोफेसर ललिता कुमारी के कुशल प्रबंधन में 'हर घर तिरंगा','आपरेशन सिंदूर' विषय पर रंगोली, व ' वॉल डेकोरेशन', सैल्फी प्वाइंट, राखी मेंकिंग आदि प्रतियोगिताएं करवाई, जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। छात्राओं ने अत्यंत आकर्षक व स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत प्रस्तुतियां दी। प्राचार्य ने छात्राओं व ललित कला विभाग को बधाई देते हुए कहा कि राष्ट्रप्रेम पूर्ण पवित्र पूजनीय भाव होता है, स्वतंत्रता सेनानियों के इसी त्याग देशप्रेम व संघर्ष के कारण हमें विकसित स्वतंत्र राष्ट्र का नागरिक होने का सौभाग्य मिला है और ध्वज हमेशा हमें शाश्वत पहचान देता है। प्रधानमंत्री ने 'हर घर तिरंगा' के माध्यम से उन्नत राष्ट्र भाव व गौरव से भरी पहचान को हर घर, हर जन तक पहुंचाने का पावन कार्य किया है।

**भिवानी।** छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली देखत अतिथि। *फोटो : हरिभूमि*

## किसानों का धरना रहा जारी

- किसान संगठन की बीमा देने व घोटाले की जांच की मांग।

हरिभूमि न्यूज ⏭ बाढ़ड़ा

कपास बीमा क्लेम में घोटाले की जांच व क्लेम प्राप्ति तक संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर बाढ़ड़ा आनजमंडी में धरना जारी रहा। अध्यक्षता प्राचार्य हवासिंह किसान सभा दादरी के प्रधान रणधीर कूंगड़, भारतीय किसान यूनियन भूपसिंह, एमएसपी किसान मोर्चा के ब्रह्मप्रकाश, सीटू के कामरेड सुमेर ने की। संचालन किसान सभा बाढ़ड़ा के सचिव रामपाल धारणी ने की। उन्होंने कहा कि संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर पूरे देश में 13 अगस्त को जिलों और तहसील हेड क्वार्टर पर प्रदर्शन किए जाएंगे, जिसकी तैयारी के लिए ब्लॉक के दर्जनों गांव हडौदा, हडौदी, मांढ़ी केहर, मांढ़ी हरिया, मांढ़ी पिरानु, हुई, जगरामबास व डालावास आदि गांवों में अभियान चलाया। किसान नेताओं ने कहा कि खरीफ और 2023 कपास बीमा क्लेम में कृषि विभाग के अधिकारियों ने मिलकर चुनाव आचार संहिता के चलते जिला भिवानी व चरखी-दादरी जिलों के 450 करोड़ रुपयों के क्लेम को लगभग सौ करोड़ रुपये कर 250 करोड़ रुपयों का घोटाला किया। इतना ही नहीं हरियाणा भर में वर्ष 2022-23 में जहां फसल बीमा क्लेम 2497 करोड़ रुपये मिला। चुनावी वर्ष 2023-24 में यह क्लेम सिर्फ 224 करोड़ रुपये किसानों को दिया गया है। धरने पर मास्टर रघुवीर, ओमप्रकाश खोरडा, करतार, महीपाल कारीदास, श्योराण खाप प्रधान बिजेंद्र सिंह बेरला, प्रताप सिंह मौजूद रहे।

**बाढ़ड़ा।** कस्बे की अनाज मंडी में धरने पर नारेबाजी करते किसान। *फोटो : हरिभूमि*

## आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस मिलकपुर में 'आजादी के परवाने' पर्व और रक्षाबंधन पर कार्यक्रम

**बवानीखेड़ा।** मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में "आजादी के परवाने" पर्व, रक्षाबंधन उत्सव तथा विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य नितीश मिश्र के प्रेरणादायक संबोधन से हुआ। उन्होंने रक्षाबंधन के महत्व को बताते हुए कहा कि यह त्यौहार भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और सुरक्षा के वचन का प्रतीक है। साथ ही, उन्होंने श्रावण मास अर्थात पढ़ने व पढ़ाने तथा सुनने और सुनाने के महीने को 'सावन मास' की संज्ञा देते हुए इसके धार्मिक और सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर राखी बनाने, हिंदी और अंग्रेजी निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने अपनी सृजनात्मकता और कलात्मक प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया। समारोह के अंत में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के गीत, कविताएं और देशभक्ति कार्यक्रम ने वातावरण को प्रेम, भाईचारे और देशभक्ति की भावना से सराबोर कर दिया। सभी छात्रों की सक्रिय भागीदारी ने इस आयोजन को यादगार बना दिया। व इस अवसर पर स्कूल निदेशक साहिल यादव एवं उप प्रधानाचार्या गीता यादव, प्राथमिक प्रभारी प्रोमिला यादव आदि मौजूद रहे।

### PUBLIC NOTICE

it is for general information that I Surender Kumar S/o Radhey Shyam R/o House No. 110 Rewari Road Ward no. 2 Behind Dr. Narula Vikas Nagar Narnaul Distt. mahendergarh Haryana 123001 declare that name of mine has been wrongly written as Surender in my minor daughter namely Khushi aged 16 years in her school record The actual name of mine is Surender Kumar which may be amended accordingly. necessary correction as per rule.

### पिकअप ने महिला को मारी टक्कर, मौत

**तोशाम।** तोशाम-भिवानी मार्ग पर पेट्रोल पंप के नजदीक एक पिकअप गाड़ी चालक एक महिला को टक्कर मारकर मौके से फरार हो गया। हादसे में महिला की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। गांव रिवासा निवासी कृष्ण ने बताया कि गांव चैनत निवासी उसकी चाची बाला पहले उसके पास गांव रिवासा में रहती थी।

## बवानीखेड़ा में खाद के लिए मारामारी से किसान परेशान

# घर-बार को छोड़ लाइन में लग रही महिलाएं

- आधे से अधिक खरीफ सीजन बीता, नहीं खत्म हो रही समस्याएं

हरिभूमि न्यूज ⏭ बवानीखेड़ा

लगता है कि यूरिया व डीएपी खाद की कमी किसानों के साथ साए की तरह चिपक गई है। खरीफ फसल का आधे से ज्यादा सीजन बीतने के बावजूद भी किसानों को खाद नहीं मिल पा रही है। अब भी किसान खाद के लिए मारे मारे फिर रहे है। ऐसा ही नजारा शनिवार को बवानीखेड़ा में एक खाद की एजेंसी के सामने को देखने को मिला। रक्षा बंधन का पर्व होने के बाद भी पूरे दिन महिला व पुरुष यूरिया व डीएपी खाद के लिए पैक्स सोसायटी के आगे लाइनों में लगे रहे। हालांकि घंटों इंतजार करने के बाद कुछ किसान तो खाद लेने में कामयाब हो गए,लेकिन आधे से ज्यादा किसानों को यूरिया खाद नहीं मिल पाई है।जिस वजह से अब भी इस बार खरीफ फसलों की औसतन पैदावार घटना लाजिमी है।

**बवानीखेड़ा।** खाद के लिए लाइनो में लगी महिला किसान। *फोटो : हरिभूमि*

### यूरिया और डीएपी आने की मिली थी सूचना

शनिवार को जैसे ही किसानों को यूरिया व डीएपी खाद आने की सूचना मिली तो किसान पैक्स सोसायटी के कार्यालय पर पहुंचने शुरू हो गए। कुछ ही देर में अनेक किसान पहुंच गए। जिनमें महिलाओं के साथ साथ किसान पुरुषों की भी संख्या अच्छी खासी थी। हैरानी की बात यह है कि महिला किसान रक्षा बंधन का पर्व छोड़कर खाद के लिए लाइनों में खड़ी हुई। शुरू में तो खाद के लिए ज्यादा किसान नहीं थे,लेकिन जिस हिसाब से किसानों को खाद आने का पता चलता गया तो वहां पर भीड़ बढ़नी शुरू हो गई। जिस वजह से महिला किसानों की अलग तो पुरुष किसानों की अलग से लाइनें बनवानी शुरू कर दी। पूरे दिन इसी तरह की स्थिति बनी रही। कुछ किसान तो खाद लेने में कामयाब हुए तो अनेक किसानों को खाद नहीं मिल पाई। जिसके चलते किसानों को मायूसी ही हाथ लगी। इनेलो नेता सुनील लांबा ने भी किसानों का दर्द जाना और सरकार को आडे हाथों लेते हुए बताया कि न तो सरकार किसानों के खेतों से बरसाती पानी निकाल पाई है।

# दिनभर छाए रहे बादलः हल्की बूंदाबांदी, गर्मी से मिली राहत

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौल

पिछले एक सप्ताह से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में मानसून ब्रेक की स्तिथि बनी हुई थी, क्योंकि मानसून टर्फ उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों के तराई क्षेत्रों पर विराजमान रही। जिससे हरियाणा के उत्तरी जिलों में लगातार मानसून सक्रिय बना रहा, जबकि शेष हरियाणा में कहीं कहीं केवल खंड बारिश की गतिविधियां देखने को मिली, साथ ही लगातार पश्चिमी हवाएं चलने से सम्पूर्ण इलाके में धीरे धीरे दिन व रात के तापमान में बढ़ोतरी दर्ज हुई।

शनिवार को जैसे ही मानसून टर्फ उत्तरी पर्वतीय से वापस हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर पहुंची, वैसे ही एक बार फिर से हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर मानसून गतिविधियां देखने को मिली। हरियाणा के पूर्वी पानीपत, सोनीपत, व एनसीआर दिल्ली तथा दक्षिणी जिलों फरीदाबाद, पलवल, मेवात, गुड़गांव, रेवाड़ी में अच्छी बारिश, जबकि महेंद्रगढ़, चरखी दादरी व मध्यवर्ती जिलों झज्जर, रोहतक, के साथ जींद, कैथल, भिवानी, हिसार में हल्की बारिश व बूंदाबांदी हुई। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर स्थानों पर हल्की बारिश व बूंदाबांदी हुई। जिससे सम्पूर्ण इलाके में दिन व रात के तापमान में हल्की गिरावट देखने को मिली। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर स्थानों दिन व रात के तापमान सामान्य से नीचे बने हुए हैं। जिले में सुबह से शाम तक लगातार बादलों की आवाजाही के बीच हल्की बारिश व बूंदाबांदी हुई। जिससे मौसम सुहावना बना रहा। जिले में नारनौल व महेंद्रगढ़ का दिन तथा रात का तापमान क्रमशः 34.5, 25.5 डिग्री सेल्सियस व 34.0, 27.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

नारनौल। आसमान में छाए बादल। फोटो : हरिभूमि

## क्या कहते है मौसम विशेषज्ञ

मौसम विशेषज्ञ डॉ. चंद्र मोहन ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से देश के बड़े हिस्सों में विशेषकर हरियाणा एनसीआर दिल्ली में दक्षिण पश्चिम मानसून कमजोर हो गया था। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में ब्रेक इन मानसून की स्थिति ने उन इलाकों में भी बारिश कम कर दी है। जहां इस समय इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है। हालांकि यह मौसम की स्वाभाविक प्रक्रिया है और चिन्ता की बात तभी बनती है, जब यह दौर लंबा खींच जाए, केवल एक सप्ताह के अंतराल बाद धीरे धीरे एक बार फिर से मानसून की चाल हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर बनी है। वर्तमान में मानसून टर्फ भटिंडा, रोहतक, दिल्ली, हरदोई, बाराबंकी, देहरी से बंगाल की खाड़ी तक फैली हुई है, साथ ही एक ऊपरी हवाओं का चक्रवातीय सर्कुलेशन पश्चिमी उत्तर प्रदेश व आसपास के क्षेत्रों पर बना हुआ है। इस चक्रवातीय सर्कुलेशन से गुजरात तक एक टर्फ बनी हुई हैं, साथ ही इस चक्रवातीय सर्कुलेशन से झारखंड तक एक अलग टर्फ बनी हुई हैं। इन मौसम प्रणालियों के संयुक्त प्रभाव से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अगले दो तीन दिन तक मौसम परिवर्तनशील बना रहेगा और बिखराव वाली बारिश व बूंदाबांदी जारी रहेगी। इसके अलावा एक नया कम दबाव का क्षेत्र जल्द ही 13 अगस्त को बंगाल की खाड़ी पर बनने तथा वह डिप्रेशन में तब्दील होने से अगर इस मौसम प्रणाली का ट्रेक राजस्थान तक बना तो हरियाणा एनसीआर दिल्ली पर 15 से 21 अगस्त के दौरान एक बार फिर से मानसून में सक्रियता देखने को मिलेगी।

## खबर संक्षेप

महेंद्रगढ़। पौधरोपण करते स्कूल के विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

### बचपन प्ले स्कूल के बच्चों ने लगाए पौधे

**महेंद्रगढ़।** मोहल्ला जवाहरनगर स्थित बचपन प्ले स्कूल व ओम साईंराम एकेडमिक हाइट्स पब्लिक स्कूल के बच्चों ने शहर के आईटीआई रोड के बीच में बने हुए डिवाइड पर लगभग 400 पौधे लगाए गए, जिनमें मुख्य रूप से कनेर, टपोरी, गुड़हल, पाम खजूर तथा रंग बिरंगे फूलों के पौधे शामिल थे। जानकारी देते हुए विद्यालय चेयरमैन रमेश सैनी एवं चेयरपर्सन निशा सैनी ने बताया कि यह सभी पेड़ पौधे विद्यालय के बच्चों द्वारा एकत्रित किए गए पैसों से लगाए गए हैं। इस अवसर पर प्राचार्या ज्योति शर्मा, बचपन हेड रूपाली अरोड़ा, उप प्राचार्या मोनिका दीवान, प्रवक्ता अमरसिंह सोनी व पूनम गोस्वामी आदि उपस्थित रहे।

### पौधे को राखी बांधकर लिया सुरक्षा का संकल्प

**महेद्रगढ़।** अनहद शक्ति फाउंडेशन रक्षाबंधन पर्व पर पेड़ों की सुरक्षा का संकल्प लेकर उन्हें राखी बांधी और उनकी पूर्ण देखभाल की जिम्मेदारी लेते हुए पर्यावरण को हरा भरा बनाने के लिए प्रतिवर्ष पौधरोपण कार्यक्रम मनाने का लक्ष्य रखा गया। अनहद शक्ति फाउंडेशन की अध्यक्षा शैलजा यादव ने उपस्थित परिवार के सभी साधकों पेड़ों की रक्षा करने की शपथ दिलवाई।

### अटेली क्षेत्र में मनाया रक्षाबंधन का त्यौहार

**मंडी अटेली।** शनिवार को अटेली क्षेत्र रक्षाबंधन का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। रक्षाबंधन पर्व भाई-बहन के अटूट प्रेम का प्रतीक माना जाता है। यह त्योहार हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। भाई-बहन के इस पवित्र त्यौहार के दिन बहन अपने भाई को प्यार के डोर के रूप में राखी बांधती है।

## आयोजन में काफी संख्या में विप्रजनों ने लिया भाग

# वेद मंत्रों से गूंज उठी महर्षि च्यवन की तपोस्थली ढोसी

सर्वप्रथम सभी विप्रजनों ने शिवकुंड में खड़े होकर जलक्रिया के दौरान वेद मंत्रों से सभी नदियों का आह्वान कर ऋषि तर्पण व पितृ तर्पण किया।

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौल

शारदा संस्कृत महाविद्यालय की ओर से शनिवार को महर्षि च्यवन की तपोस्थली ढोसी धाम के शिवकुंड पर विप्रजनों ने अपना पर्व श्रावणी उपाकर्म वेद मंत्रों के साथ बड़ी श्रद्धा व आस्था के साथ मनाया। श्रावणी उपाकर्म शारदा संस्कृत महाविद्यालय के आचार्य देवदत्त शास्त्री के सानिध्य में आयोजित किया गया। आचार्य क्रांति निर्मल ने वेद मंत्रों के साथ इस पूरे कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

सर्वप्रथम सभी विप्रजनों ने शिवकुंड में खड़े होकर जलक्रिया के दौरान वेद मंत्रों से सभी नदियों का आह्वान कर ऋषि तर्पण व पितृ तर्पण किया। इसके बाद सभी ब्राह्मणों ने मंदिर परिसर में सप्त ऋषियों का पूजन व हवन कर नए यज्ञोपवीत धारण किए। इस पूजन कार्यक्रम में बतौर यजमान गौड़ सभा के पूर्व प्रधान शिवकुमार मेहता, सहसचिव हेमंत भारद्वाज सिहमा, कार्यकारिणी सदस्य अमित पांडे व एडवोकेट मनीष वशिष्ठ ने शिरकत की। इस दौरान शारदा संस्कृत महाविद्यालय के विद्वान पंडितों ने महर्षि च्यवन के ढोसी धाम को वेद मंत्रों की मधुर ध्वनि से गुंजायमान कर दिया। कार्यक्रम के दौरान शारदा संस्कृत महाविद्यालय के 11 नए ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत धारण करवाए।

इस अवसर पर आचार्य क्रांति निर्मल ने कहा कि श्रावणी पर्व ब्राह्मणों का सबसे बड़ा पर्व है। उन्होंने कहा कि इस दिन हम सभी देवताओं व सप्त ऋषियों का पूजन करते है और अपनी शुद्धि करते हैं।

आचार्य ने कहा कि आज संस्कृत दिवस भी है और संस्कृत देव वाणी है, इसलिए हम सभी ब्राह्मणों को इसका ज्ञान होना चाहिए। आचार्य ने सभी को यज्ञोपवीत की महिमा के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी को संस्कार देने व सनातन धर्म को बचाए रखने के लिए इस तरह के आयोजन की नितांत आवश्यकता है।

नारनौल। शिव कुंड ढोसी में स्नान करते विप्रजन व ढोसी में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते विप्रजन। फोटो : हरिभूमि

### ये रहे मौजूद

इस मौके पर हंसराज मेहता कॉलेजियम सदस्य, देशराज मेहता कॉलेजियम सदस्य, महेश मेहता कॉलेजियम सदस्य गौड़ सभा, नागेंद्र दत्त शर्मा, गोपाल शास्त्री, राजेश बोहरा शास्त्री, रविंद्र शास्त्री, आचार्य बजरंग शास्त्री, रविंद्र शास्त्री, दीपक शास्त्री, पंडित मनोज शास्त्री, मनीष शास्त्री, पंडित नवीन कौशिक, भूपेश शास्त्री, रौनक पुजारी, पंडित मदन शर्मा, कुलदीप निर्मल आदि सहित शारदा संस्कृत महाविद्यालय ब्रह्मचारी मौजूद थे।

नारनौल। दौंगड़ा जाट में दंगल से पूर्व पहलवानों को मिलाते लोग। फोटो : हरिभूमि

## दौंगड़ा जाट का कुश्ती दंगल बलजीत बाघोत के रहा नाम

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौल

दौंगड़ा जाट स्थित बाबा भैया मंदिर परिसर में दो दिवसीय बाबा का जागरण, भंडारा, मेला व खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। पंच दिनेश प्रजापति ने बताया कि मेले से पूर्व रात्रि बाबा भैया का जागरण आयोजित किया गया। जिसमें गायक कलाकारों ने बाबा भैया का भक्ति के गीतों से गुणगान किया। पंचायत कि ओर से जिला पार्षद सचिन कुमार, समाजसेवी हेमंत भारद्वाज एडवोकेट सिहमा, चेयरमैन राजकुमार दौंगड़ा अहीर, अजय शर्मा दिल्ली, बजरंग शर्मा दौंगड़ा जाट का पगड़ी पहनाकर सम्मान किया।

दिनेश चौधरी ने बताया कि मेले में 11 हजार का कुश्ती दंगल बलजीत बाघोत ने जीता। वहीं वॉलीबॉल में प्रथम स्थान पर ककराला व द्वितीय स्थान पर दौंगड़ा जाट की टीम रही। कबड्डी में मिताथल भिवानी की टीम प्रथम, अर्जुन स्टेडियम जींद की टीम द्वितीय स्थान पर रही।

मंच संचालक सप्पू शर्मा ने बताया कि मेले में पहुंचे सभी श्रद्धालुओं ने बाबा का प्रसाद ग्रहण किया तथा प्रतियोगिताओं के सभी विजेता खिलाड़ियों को ग्राम सरपंच मुकेश कुमार जांगिड़ ने कमेटी की ओर से नकद ईनाम देकर सम्मानित किया। समाजसेवी अजय शर्मा व बजरंग शर्मा ने कहा कि मेले आपसी भाईचारे व सांझी संस्कृति की धरोहर हैं। इस मौके पर पार्षद सचिन कुमार, हेमंत भारद्वाज एडवोकेट सिहमा, अजित पंच, महावीर मास्टर, राजवीर पंच, जितेंद्र पंच, कृष्ण नंबरदार, डॉ. विकास, सतीश डीलर, दिनेश पंच, दिनेश चौधरी आदि मौजूद थे।

## राहुल गांधी मानसिक रूप से दिवालियापन के कगार परः एडवोकेट राकेश शर्मा

**नारनौल।** भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एडवोकेट राकेश शर्मा ने प्रेस के नाम जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि जिस प्रकार से विपक्ष के नेता राहुल गांधी भारत की संवैधानिक संस्थाओं को धमकाते हैं अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं यह इनकी मानसिक दिवालीएपन की पहचान है। जो लोग राजनीतिक रूप से हताश निराश हैं और जिन्होंने जनता के विश्वास को खो दिया है वो उसमें अपनी कमियों के ढूंढने की बजाय, जनता से जुड़ने की बजाय हमारी संवैधानिक संस्थाओं पर आए दिन आरोप प्रत्यारोप करते रहते हैं और इन्होंने जिस प्रकार से चुनाव आयोग को टारगेट किया है यह एक बड़ा ही निंदनीय कृत्य है। क्योंकि जहां-जहां यह चुनाव जीते हैं वहां पर लड्डू बांटने का काम करते हैं और जहां यह चुनाव हार जाते हैं वहां यह चुनाव आयोग पर प्रश्न चिन्ह लगाने का काम करते हैं।

इनको इतिहास में झाकना चाहिए कि किस प्रकार से इन्होंने संवैधानिक संस्थाओं का समय-समय पर दुरुपयोग किया है और यह अपनी हार को पचा नहीं पा रहे हैं। उन्होंने कहां की जिस प्रकार से कांग्रेस ने चुनाव आयोग पर महाराष्ट्र और कर्नाटक पर टिप्पणी की यह इनके स्वार्थ को दर्शा रही है इनकी अज्ञानता का प्रतीक है। कांग्रेस ने जनता के विश्वास को खो दिया है और जिस प्रकार से अपरिपक्व बातें संसद के बाहर और संसद के अंदर करते हैं इसके कारण देश की जनता इनको पहचान चुकी है और उनकी अपरिपक्वता के कारण और देश विरोधी बयानों के करण यह अपना विश्वास खो चुकी हैं। कांग्रेस धरातल की तरफ जा रही है। देश के अंदर ऐसे-ऐसे राज्य हैं जिसमें पिछले कई सालों से कांग्रेस की सरकार नहीं बनी है। इनके बारे में उनको चिंतन मनन करना चाहिए। कभी यह प्रधानमंत्री पर टिप्पणी करते हैं कभी चुनाव आयोग पर टिप्पणी करते हैं कभी सुप्रीम कोर्ट पर टिप्पणी करते हैं हम इसकी कड़ी भर्तासना करते हैं। इसका खामियाजा इनको आने वाले दिनों में भी इनको भुगतना पड़ेगा। कांग्रेस घास की तरह कांग्रेस भी देश के लिए घातक है।

### कनीना से बाइक चोरी

**कनीना।** नहर के समीप खड़ी की गई बाइक अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। इस बारे में ललित वासी निंबी ने सिटी थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह कोसली से अपने गांव निंबी जा रहा था। रास्ते में कोटिया नहर के पास दुकान बाइक खराब हो गई। जिसे वहीं पर खड़ी करके चला गया। सुबह आकर देखा तो बाइक वहां नहीं मिली। पुलिस ने बाइक चोरी का केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

### कार ने बाइक सवार को मारी टक्कर

**नांगल चौधरी।** कोरियावास मेडिकल कॉलेज के सामने एक अनियंत्रित शिफ्ट डिजायर कार ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर रूप से घायक बाइक सवार को नारनौल के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां स्थिति नाजुक होने पर पीड़ति को जयपुर रेफर कर दिया। पीड़ति के परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज करके कार्रवाई आरंभ कर दी है। कोरियावास निवासी दीपक शर्मा पुत्र रामकिशोर नारनौल से गांव जा रहा था। मेडिकल कॉलेज के सामने एक अनियंत्रित कार ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी की पीड़ति करीब 10 फीट दूर जाकर गिरा। धरना स्थल पर बैठे लोगों ने तत्परता पूर्वक पीड़ति को नारनौल के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां चिकित्सकों ने अथक प्रयास करने के बावजूद होश नहीं आया। नाजुक हालात को देखते हुए चिकित्सकों ने पीड़ति को जयपुर के लिए रेफर कर दिया।

कनीना। एसडी स्कूल में आयोजित समारोह में हिस्सा लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

### एसडी विद्यालय में रंगारंग कार्यक्रम आयोजित

**कनीना।** एसडी स्कूल ककराला में रक्षाबंधन के पर्व पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में सावन के गीतों ने संमा बांध दिया। वहीं राखी बनाओ प्रतियोगिता में तिरंगा राखी ने मन मोह लिया। नर्सरी कक्षा से लेकर आठवीं तक के विद्यार्थियों ने मनमोहक राखी बनाई। इसके अलावा रंग भरो, स्लोगन प्रतियोगिता व तिरंगा यात्रा भी निकाली गई। छात्रों ने रक्षाबंधन के महत्व व भाई बहन के पवित्र रिश्ते को धरातल पर उतारा। स्कूल के प्राचार्य ओमप्रकाश ने छात्रों की प्रतिभा की सराहना करते हुए प्रोत्साहित किया। चेयरमैन जगदेव यादव ने सभी विद्यार्थियों व स्टॉफ सदस्यों को रक्षाबंधन पर्व की बधाई दी।

नारनौल। जन्मदिवस पर पूर्व मंत्री कर्नल राव रामसिंह को नमन करते हुए।

### पूर्व मंत्री कर्नल राव रामसिंह को किया याद

**नारनौल।** पूर्व मंत्री कर्नल राव रामसिंह के 100वें जन्मदिवस पर सिंघाना रोड स्थित आदर्श कमानी वर्कशॉप पर उन्हें नमन किया गया। इस मौके पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए गए तथा लड्डू बांटकर खुशी मनाई गई। कार्यक्रम संयोजक संजय मिस्त्री ने बताया कि कर्नल साहब सेना से रिटायर्ड होने के बाद राजनीति में सक्रिय हुए। उन्होंने हरियाणा विधानसभा में स्पीकर पद को सुशोभित किया। हरियाणा सरकार में शिक्षा मंत्री बनकर गरीब और असहाय लोगों के लिए कार्य किए। परिवहन मंत्री बनकर रोडवेज बेड़े में सुधार किया। केंद्र सरकार में बंजर भूमि विकास मंत्री बने। इस कार्यक्रम का आयोजन संजय मिस्त्री बापड़ोली ने किया। इस अवसर पर रिटायर्ड हैडमास्टर केहर सिंह, शंकर मिस्त्री, दीपू मिस्त्री, राजू मिस्त्री, विक्रम मिस्त्री, मनोज मिस्त्री, अनिल मिस्त्री, राजबीर यादव, सिंहराज मिस्त्री, महेंद्र कबाड़ी, चांद व सूरज कुमार आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मंडी अटेली। बाबा भोमिया यूथ क्लब की ओर से मेले में सम्मानित करते हुए।

### कबड्डी के फाइनल मैच में कन्हौरी की टीम रही प्रथम

**मंडी अटेली।** बाबा भोमिया मेला कमेटी व समस्त ग्रामवासियों की ओर से गांव खैराणी में बाबा भोमिया का मेला आयोजित किया गया। मेले में मुख्य अतिथि समाजसेवी दयाराम यादव वजीराबाद ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया। कबड्डी के फाइनल मैच में कन्हौरी की टीम प्रथम रही, जबकि गादला गांव की टीम द्वितीय स्थान पर रही। कन्हौरी की टीम प्रथम टीम को 21 हजार व द्वितीय 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया। मेले में मंच संचालन राकेश कुमार ने किया। मेला कमेटी के सदस्य व सरपंच बजरंग सिंह व सूबेदार राजेंद्र शर्मा ने बताया कि कबड्डी के 65 केजी भार के डू एंड डाई में बधराणा प्रथम को 21 हजार व द्वितीय कन्हौरी 15 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया। इस मौके पर सरपंच बजरंग सिंह, जिला पार्षद मुनीपाल, मेला कमेटी प्रधान रविंद्र सिंह, मयंक यादव, अजीत सिंह, सूबेदार बिरेंद्र सिंह, सूबेदार राजेंद्र शर्मा, राजेंद्र साहब, महेश शर्मा, चरण सिंह, राहुल पंच, महिपाल, हवलदार कृष्ण सिंह आदि मौजूद थे।

### त्रिवेणी लगाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

**महेंद्रगढ़।** गांव बलायचा स्थित बाबा ब्रह्मचारी आश्रम सेवा समिति द्वारा प्रयास श्रीबालाजी संस्था के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान समिति के सदस्यों ने बरगद, पीपल, नीम और बेलपत्र के चार त्रिवेणी संयोजनों को सार्वजनिक स्थलों पर लगाया गया। समिति प्रवक्ता जुगल किशोर ने जानकारी देते हुए बताया कि यह अभियान समिति द्वारा हर वर्ष चलाया जाता है, जिसका उद्देश्य न केवल पौधारोपण करना है, बल्कि भारतीय संस्कृति में पवित्र माने जाने वाले वृक्षों के महत्व को जनमानस तक पहुंचाना भी है। बरगद, पीपल और बेलपत्र को त्रिवेणी कहा जाता है और इनका धार्मिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय दृष्टि से विशेष महत्व है। समिति प्रधान राजेन्द्र शर्मा ने बताया कि हमारी संस्था केवल पौधे लगाकर छोड़ नहीं देती, बल्कि उनका पालन-पोषण और संरक्षण भी सुनिश्चित करती है। इस अवसर पर पूर्व सरपंच किशनलाल, वेदप्रकाश नम्बरदार, पूर्व पंच ओमप्रकाश, रोहताश चौकीदार, अनिल व कृष्ण आदि उपस्थित रहे।

नारनौल। राकेश महता को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

## प्रधान राकेश मेहता को रोटरी क्लब ने किया सम्मानित

**नारनौल।** रोटरी क्लब सिटी की ओर से श्रीगौड़ ब्राह्मण सभा के लगातार तीसरी बार प्रधान चुने जाने पर राकेश मेहता एडवोकेट के सम्मान समारोह का आयोजन महावीर चौक स्थित रोटरी रसोई पर किया। क्लब प्रधान राजकुमार चौधरी ने समस्त कार्यकारिणी सहित गौड़ ब्राह्मण सभा प्रधान राकेश मेहता, सभा के कार्यकारिणी सदस्य अमित पांडे, प्रवीण कौशिक व एडवोकेट रवि शर्मा को अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर गौड़ ब्राह्मण सभा के प्रधान राकेश मेहता ने कहा कि रोटरी क्लब क्षेत्र में लगातार जनहित कार्यों के लिए जाना जाता है। शहर में जरूरतमंदों के लिए हर क्षेत्र में क्लब ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। रोटरी प्रधान राजकुमार चौधरी ने उन्हें सम्मानित करते हुए कहा कि किसी भी समाज का अध्यक्ष उसकी धुरी होता है, जो अपने समाज को आगे बढ़ाने व दिशा देने का कार्य करता है। एडवोकेट राकेश मेहता को लगातार तीसरी बार चुनकर अपना प्रतिनिधित्व उन्हें सौंपा है। इस मौके पर राजकुमार चौधरी, एडवोकेट राजकुमार यादव, प्रवीण संघी, गोपाल मित्तल, संजय गर्ग, विनोद चौधरी, नरेश गोगिया, नितिन अग्रवाल, पवन गुप्ता, सुनील गौड़ आदि मौजूद थे।

# दी केंद्रीय सहकारी बैंक की बैठक में प्रस्तुत किया बैंक का लेखा-जोखा

हरिभूमि न्यूज ⏭महेंद्रगढ़

शहर के रेलवे रोड स्थित दी महेंद्रगढ़ केन्द्रीय सहकारी बैंक में 58वीं वार्षिक आमसभा आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता बैंक के चेयरमैन राजेन्द्र शर्मा ने की। इस दौरान बेहतरीन कार्य करने वाली बैंक की शाखाओं व पैक्सों को सम्मानित किया गया। बैंक के महाप्रबंधक प्रशांत यादव ने वित्त वर्ष 2024-25 की बैलेंस सीट और लाभ-हानि खाता सभा पटल पर प्रस्तुत करते हुए बताया कि हमारे बैंक के प्रति ग्राहकों का विश्वास बढ़ता जा रहा है, जिसके चलते डिपॉजिट में लगातार वृद्धि हो रही है। बैंक ने गत वित्त वर्ष 7.24 करोड़ रुपये का लाभ अर्जित किया है। बैंक द्वारा किसानों सहित सभी वर्ग को आधुनिक बैंकिंग सुविधाएं दी जा रही हैं।

महेंद्रगढ़। किसानों को सम्मानित करते विधायक कंवर सिंह यादव। फोटो : हरिभूमि

महाप्रबंधक ने बताया कि महेन्द्रगढ़ हरियाणा का एकमात्र जिला है, जिसकी सभी पैक्स कम्प्यूटरीकृत हो चुकी हैं। विधायक एवं बैंक के निदेशक कंवर सिंह यादव ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा किसानों को बिना ब्याज का ऋण दिया जा रहा है तथा किसानों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं भी लागू की गई हैं। जिला महेन्द्रगढ़ में भरपूर खाद आ रही है तथा पैक्सों के माध्यम से जिले के किसानों को इसका त्वरित लाभ मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि बैंक द्वारा अपने ग्राहकों को लोन के साथ-साथ सभी आधुनिक सुविधाएं बिना किसी परेशानी के मिलनी चाहिए। किसानों के हित की रक्षा को सर्वोपरि बताते हुए उन्होंने पैक्सों के स्टॉफ को किसानों के कार्य प्राथमिकता के आधार पर करने के निर्देश दिए।

बैंक चेयरमैन राजेंद्र शर्मा ने कहा कि बैंकों को कड़ी मेहनत से और निष्पक्षता से काम करना चाहिए। बैंक का नए भवन बनाने का काम जल्दी शुरू कराने का प्रयास किया जा रहा है। बैंक द्वारा सभी प्रकार की सुविधाएं ग्राहकों को प्रदान की जाएंगी। इस अवसर पर बैंक के उपाध्यक्ष दीपक यादव, निदेशक पृथ्वीचंद, नवल सिंह, लीलाराम, सतीश कुमार, विकास अधिकारी जगत सिंह, सतीश लाटा, सुरेंद्र, प्रभाकर, शक्तिपाल, राजेश, नवीन, गजराज व विनोद आदि उपस्थित रहे।

### बजाड़ में पौधे लगाकर मनाया जन्मदिन

**मंडी अटेली।** अटेली क्षेत्र के गांव बजाड़ में राजवीर ने अपने पुत्र नमन के जन्मदिन पर पौधे लगाकर जन्मदिन मनाया। इस मौके पर राजवीर ने बताया कि हमें स्वच्छ हवा और शुद्ध वातावरण के लिए पेड़ लगाना बहुत जरूरी है। फिजूलखर्ची की जगह हमें ऐसे समाजिक कार्य करके बच्चों की खुशियां मनानी चाहिए। बच्चों के हाथों से लगाए पौधे पेड़ का रूप धारण करके हमें ठंडी छाव देंगे। अच्छी जलवायु एवं पर्यावरण के लिए सभी नागरिकों को पौधरोपण करना चाहिए। इस मौके पर इंचार्ज जितेंद्र, धर्मपाल, राकेश, सुरेश, महिपाल व छोटेलाल आदि ग्रामीण उपस्थित

आवरण कथा
ओम निश्चल

# 79वां स्वतंत्रता दिवस
# आजादी की फलश्रुति

हम सब देशवासी आगामी 15 अगस्त 2025 को भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाएंगे। कदम-कदम आगे बढ़ते हुए हमने कई अभूतपूर्व सफलताएं हासिल कीं, नए-नए मुकाम को छुआ। हम निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर भी हैं। लेकिन आज भी देश में कुछ ऐसी चुनौतियां बरकरार हैं, जिनका निवारण किए बिना हम अपना प्राचीन गौरव प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इसके लिए देश के हर नागरिक के मन में स्वाधीनता के प्रति सम्मान भाव होना अत्यंत आवश्यक है।

एक-एक कदम हौले-हौले चलते हुए हम सब भारत देश का 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं। एक लंबी यात्रा हमने आजादी के बाद तय कर ली है। 1947 से 2025 तक की स्वातंत्र्योत्तर यात्रा में देश ने तमाम क्षेत्रों में बहुत तरक्की की है, कृषि उत्पादन एवं खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की है वरना एक ऐसा दौर था, जब गेहूं भी अमेरिका से आयात करना पड़ता था। उद्योग धंधों के क्षेत्र में भी लघु उद्योग सेक्टर और मझोले उद्योगों की स्थापना एवं विकास में देश ने मजबूती से कदम रखा है। तकनीकी सामर्थ्य की दिशा में भी देश ने अग्रतर स्थिति हासिल की है। आजादी के बाद बनी पंचवर्षीय योजनाओं के फलस्वरूप हर क्षेत्र में देश को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य हुआ। आजादी के बाद देश में बड़े-बड़े बांध बने, विद्युत परियोजनाएं लगाई गईं, सिंचाई के लिए नहरों का संजाल तैयार किया गया। बड़े-बड़े हाईवेज बने, इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ताकि हर व्यक्ति को बैंकिंग योजनाओं का लाभ मिले। यानी, आजादी के बाद देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है।

**हर वर्ग ने निभाई अपनी भूमिका:** आजादी की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, मजहब, संस्कृति या समुदाय ने नहीं लड़ी थी। इसमें तैंतीस करोड़ भारतीयों की सामूहिक भागीदारी रही थी। राजनैतिक आजादी तो सन 1947 में ही हमें मिल गई थी। लेकिन आजादी का मिलना तब सार्थक हो सकता है, जब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हर क्षेत्र में देश तरक्की, करता हुआ दिखे। यों तो इस आजादी को हासिल करने में नेता, पत्रकार, किसान, मजदूर, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सबका योगदान रहा। उसके परिणामस्वरूप ही हमें आजाद भारत मिल सका। आजादी के बाद हासिल उपलब्धियों को तो हम सब देखते ही हैं, लेकिन एक लेखक हर क्षेत्र में आजादी की आकांक्षाओं के प्रतिफल को गहराई से महसूस करता है। वह नेता, अभिनेता, चिंतक, समाजशास्त्री एवं अर्थशास्त्री आदि अनेक भूमिकाओं में होता है। वही होता है, जो बिना लाग-लपेट के देश की वाकई तरक्की को अपने मानक पर कसता है, तभी वह दुष्यंत कुमार के शब्दों में यह लिख सकता है-*यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां। हमें मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।*

दुर्भाग्यवश धीरे-धीरे कलमकार भी अपनी नैतिकता भूलते गए। इसी पर कवि गोपाल सिंह नेपाली ने अपने एक गीत में लिखा है-
*तुझ-सा लहरों में बह लेता/ तो मैं भी सत्ता, गह लेता/ ईमान बेचता चलता तो/ मैं भी महलों में रह लेता/ हर दिल पर झुकती चली मगर/ आंसू वाली नमकीन कलम/ मेरा धन है स्वाधीन कलम/ आजादी मिलने का मोह भंग भी हुआ।*

धीरे-धीरे लेखक की स्वाधीन चेतना भी सुप्त हो गई, उसकी कलम पूंजीपतियों और इजारेदारों के गुण गाने लगी। यही वजह है कि विभाजन के दंश और आजादी के लिए 1857 से किए गए संघर्ष के बाद और जलियांवाला बाग के नृशंस हत्या कांड के बाद मिली आजादी का फल लूटने में होड़ लग गई। देश बनाने वाले और उसे स्वाधीन कराने वाले तो नेपथ्य में चले गए और स्वार्थी लोग चांदी काटने लगे।

आजादी मिलने के बाद आजादी मिलने का मोहभंग भी उतना ही प्रभावी हुआ और होता गया। यह ऐसा ही दौर था, जब 'मैला आंचल', 'पानी के प्राचीर' और 'राग दरबारी' जैसी रचनाएं लिखी गईं। लिहाजा आजादी मिलने की उपलब्धियों की बंदरबांट होने लगी।

आजादी के शुरुआती दौर में अज्ञेय जैसे कद्दावर लेखक ने भी एक निबंध में लिखा था, 'मिला सब कुछः सब बेपेंदी का। शिक्षा मिली उसकी नींव, आत्म गौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, उसकी नींव, अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली, यानी आजादी में जन्मे-पले मुखको- आजादी के आदि पुरुष को चेहरा मिला, व्यक्तित्व नहीं मिला... और बिना व्यक्तित्व के चेहरा क्या होता है? स्पष्ट है कि वह फकत चेहरा होता है। पहन लो, उतार लो, उस पर अलकतरा पोत दो चूना लगा दो... और यही सब तो हम कर रहे हैं... हर कोई कर रहा है।' (कवि मन, पृष्ठ 63) हमारे समय के एक बड़े कवि का यह विश्लेषण कथन है आजादी और उसकी फलश्रुति को लेकर।

**क्यों बंटते गए दायरों में हम:** यह सोचने की बात है कि जिस जज्बे से आजादी पाने के लिए हर नागरिक संघर्षरत था। सभी धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ण के लोग, यहां तक कि पूंजीपति भी देश की आजादी के लिए तन, मन, धन से लगे थे। सभी में राष्ट्रीय चेतना की अलख जग रही थी। भले आजादी के महासमर में गांधी, सुभाषचंद्र बोस, नेहरू और पटेल जैसे चंद बड़े नायक ही नजर आते हों पर आजादी की लौ जलाने में सभी का बराबर का हाथ रहा है। किंतु क्या हमने कभी सोचा कि इस आजादी का हमने क्या किया? हम मजहबी संकीर्ण दायरों में बंटते गए, हम वर्णों, जातियों, नस्लीय भेदभाव में बंटते गए, हम उत्तर-दक्षिण में बंटते गए। जिस आजादी के लिए सबका खून-पसीना बहा, उस आजादी की हम कीमत वसूलने में लग गए। भारत माता के लिए इससे बड़ी चिंता की बात क्या हो सकती है।

**वैश्विक शक्ति बनने का सामर्थ्य:** इतनी विषमताओं के बावजूद, 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' भारत विश्व की कूटनीति के सम्मुख अडिग होकर खड़ा रह पाया है तो यह इसकी सफल विदेश नीति का ही परिचायक है। देखते-देखते देश तरक्की की पायदान पर अग्रसर है। देश तमाम क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हुआ है, जहां सुई तक नहीं बनती थी, आज हम अनेक चीजें, शोधित तेल, खाद्यान्न, वस्तुएं विदेशों को निर्यात कर रहे हैं। अमेरिकी प्रभुत्व में सिलीकॉन वैली के भारतीय तकनीकविदों की बड़ी भूमिका है। भारत आजादी के इन अठहत्तर सालों में आज आर्थिक स्तर पर एक महाशक्ति बन चुका है। सैन्य शस्त्रों और अंतरिक्ष शोध के क्षेत्र में हम निरंतर नए क्षितिज को स्पर्श कर रहे हैं। यही नहीं सदियों पुरानी अपनी संस्कृति व ज्ञान परंपरा के नाते हम विश्वगुरु बनने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह ऋषियों, संतों, महात्माओं की तपोभूमि रही है, यह अपरिग्रह, सदाचार, अहिंसा और सर्वधर्मसमभाव की भूमि है। हमने पूरी विश्व-वसुधा को मानवता के नाते एक समझा है। हमने विश्व के कमजोर मुल्कों का हर मुसीबत में साथ दिया, हर स्तर पर विश्व शांति की पहल और अपीलें की हैं। हमने विश्व स्तर पर रंगभेद का विरोध किया। इसीलिए विश्व में हमारी सबसे अलग प्रतिष्ठा है।

**सशक्त राष्ट्र निर्माण में निभाएं भूमिका:** हालांकि अभी हमारे सम्मुख चुनौतियां भी कम नहीं हुई हैं। चिंता इस बात की है कि दलीय संकीर्णताएं ज्यादा हावी हैं, जाति, मजहब विचारधारा और सामाजिक स्तर पर लोग बंटे-बंटे से नजर आते हैं। आज आजादी हुए 78 साल हो गए हैं पर हम न भूलें कि अब यह बाहर से दिखने वाली गुलामी का दौर नहीं, यह सूक्ष्म गुलामी का दौर है- हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे सोच पर हमले इतने सूक्ष्म हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है। ऐसे सूक्ष्म हमलों के प्रति हमें सावधान रहना है। सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमें आपस में बांटने वाली सोच और अलगाववादी ताकतों से सावधान रहना होगा। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है, जहां हर नागरिक स्वाभिमान का अनुभव कर सके और उसे यह लगे कि यह देश उसका है, उसके सुख-दुख का साथी और उसके हितों का पहरुआ है। तभी सही मायने में देश का हर नागरिक स्वयं को आजाद, समृद्ध और सुरक्षित महसूस करेगा। इसके लिए हम सभी को अपने-अपने स्तर पर भूमिका निभाने के लिए संकल्पित होना होगा। *

---

सदियों के संघर्ष के बाद आर्थिक रूप से कमजोर देश रहा भारत, आज अगर विश्व की आर्थिक महाशक्ति बना है तो इसके पीछे हमारा निरंतर संघर्ष और सही दिशा में किया गया प्रयास ही रहा है। कैसे हासिल की हमने यह उपलब्धि, उस पर एक नजर।

# हर चुनौती को पार कर
# हम बने आर्थिक महाशक्ति

उपलब्धि
लोकमित्र गौतम

ढाई शताब्दियों तक परतंत्र रहने के बाद जब 1947 में भारत आजाद हुआ, तो हमें राजनीतिक आजादी तो मिल गई, लेकिन आर्थिक आजादी अभी भी दूर का सपना था। इस राजनीतिक आजादी के लिए हमने विभाजन की जो विभीषिका झेली थी और ढाई शताब्दियों तक हमारा जिस तरह से औपनिवेशिक शोषण हुआ था, उस सबके कारण कृषि पर आधारित हमारी अर्थव्यवस्था बेहद पिछड़ी हुई थी और औद्योगिकीकरण का हमारे पास लगभग न के बराबर आधार था। ऐसे में आजादी के बाद भारत को अपनी आर्थिक दिशा खुद तय करनी थी। हर तरफ चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। लेकिन इन्हीं चुनौतियों के बीच से हमने 78 सालों में अपनी जो आर्थिक यात्रा तय की है, वह महज आंकड़ों का खेल नहीं है। वह हमारे 78 वर्षों की अथक मेहनत, आत्मावलोकन और साहसिक निर्णयों का परिणाम है।

**फर्श से पहुंचे अर्श पर:** हमारी आर्थिक उपलब्धि, किसी तरह की तुलना या इम्तिहान के लिए नहीं है। हमने पिछले 78 सालों में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, वो हमारे आत्मगौरव की जीती-जागती कहानियां हैं। साल 1947 में भारत का सकल घरेलू उत्पाद आज की कीमतों पर महज 2.7 लाख करोड़ रुपए था। जबकि 78 सालों बाद आज हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं और 2024-25 के आकलन के मुताबिक हमारा सकल घरेलू उत्पाद 33.2 लाख करोड़ रुपए है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने 78 सालों में करीब 3100 फीसदी आर्थिक प्रगति की है। ये उपलब्धियां और ये आर्थिक विकास हमने पिछले 78 सालों में दिन-रात की मेहनत के बाद हासिल किया है।

**करना पड़ा कठिन संघर्ष:** जब भारत से अंग्रेज गए थे, तो हमारा औद्योगिक उत्पादन नगण्य था। हमारा बुनियादी ढांचा पूरी तरह से ध्वस्त था, क्योंकि आजादी के लिए हमने 1857 से लेकर 1947 तक यानी 90 साल तक युद्ध लड़ा था। इस कारण अंग्रेज इस दौरान भारत के अधिक से अधिक संसाधन लूटकर इंग्लैंड ले गए थे और जब उनको ये मालूम पड़ा कि वह अब भारत में नहीं रह सकते, तो उन्होंने हमारे बुनियादी आर्थिक विकास पर विशेषकर औद्योगिक विकास पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने ढाई सौ सालों के कार्यकाल में उन्होंने जो आर्थिक ढांचा खड़ा किया था, उसे भारत से जाने के पहले बुरी तरह से ध्वस्त कर दिया था। जिस समय भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम मूलतः कच्चा माल आपूर्ति करने वाले एक उपनिवेश देश भर थे। इसलिए जरूरी था कि आजादी के बाद भारत का पूरी तरह से आर्थिक पुनर्निर्माण होता और ऐसा ही हुआ।

**निरंतर बढ़ते रहे आगे:** साल 1950 से 1980 के दौरान भारत ने नियोजित अर्थव्यवस्था की जबर्दस्त कीमत चुकाई। क्योंकि योजनाबद्ध ढंग से विकास करने का एकमात्र यही रास्ता था। जिस कारण लंबे समय तक हमारी आर्थिक विकास दर 3 से 3.5 के बीच रही। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसी विकास दर के दौरान हम परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, हरित क्रांति और देश में भारी उद्योगों का निरंतर जाल भी बिछाते रहे, जो हमारी अथक मेहनत और दूरदृष्टि का नतीजा था।

**लागू किए आर्थिक सुधार कार्यक्रम:** 78 सालों के विकास क्रम को देखें तो 1991 के बाद वैश्विक दबावों के बीच हमने आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू किए, विशेषकर 1991 में तब, जब हमारे पास सिर्फ 15 दिनों के आयात भर के लिए विदेशी मुद्रा शेष थी। उस समय हमने आईएमएफ के पास अपना सोना गिरवी रखकर कर्ज लिया और आज स्थिति यह है कि हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 650 अरब डॉलर से भी ज्यादा का है। 2024 में तो एक समय यह 724 अरब डॉलर की ऊंचाई को भी पार कर गया था। आज भारत आईटी, फार्मा, रक्षा, डिजिटल पेमेंट, अंतरिक्ष और ग्रीन एनर्जी जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत है।

**दूर करनी होंगी कमजोरियां:** हालांकि हमारी अर्थव्यवस्था की कुछ बड़ी कमजोरियां भी हैं, जो आज भी हमें प्रतिव्यक्ति आय के मामले में दुनिया के गरीब देशों की कतार का हिस्सा बनाती हैं। आज भी भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार नहीं है, जिस कारण गांवों से शहरों की ओर तूफानी रफ्तार से पलायन हो रहा है। हमारे देश के असंगठित औद्योगिक क्षेत्रों की आज भी पहाड़ सरीखी चुनौतियां हैं और आज भी हमारे विदेशी मुद्रा भंडार का 50 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कच्चे तेल के आयात पर खत्म होता है। बावजूद इसके भारत आज अपने आपमें एक आर्थिक शक्ति है। साल 2017 के बाद से अब तक हम दुनिया के सर्वाधिक तीव्र गति से विकास करने वाले देश हैं। *

---

दोहे / प्रो. शरद नारायण खरे

शोभित,सुरभित,तेजमय,पावन अरु अभिराम।
राष्ट्र हमारा मान है, लिए उच्च आयाम।।

राष्ट्र-वंदना मैं करूं, करता हूं यशगान।
अनुपमेय, उत्कृष्ट है, भारत देश महान।।

नदियां, पर्वत, खेत, वन, सागर अरु मैदान।
नैसर्गिक सौंदर्यमय, मेरा हिंदुस्तान।।

लिए एकता अति मधुर, गीता और कुरान।
दीवाली-होली सुखद, एक्यभाव-पहचान।।

सारे जग में शान है, मान रहा संसार।
राष्ट्र हमारा है प्रखर, फैलाता उजियार।।

मातु-पिता, गुरु, नारियां, पातीं नित सम्मान।
संस्कार मम राष्ट्र की, है चोखी पहचान।।

तीन रंग के मान से, हैं हम सब अभिभूत।
राष्ट्रवंदना कर रहे, भारत मां के पूत।।

राष्ट्रप्रेम अस्तित्व में, आया नवल विहान।
कण-कण करने लग गया, भारत का यशगान।।

भारत की सीमाओं पर, जमे हुए हैं लाल।
शौर्य, वीरता देखकर, होते सभी निहाल।।

आजादी की वंदना, करता सारा देश।
आओ, हम रच दें यहां, वासंती परिवेश।।

---

सरोकार
शैलेंद्र सिंह

# तब नई पीढ़ी भी समझेगी
# स्वाधीनता की कीमत

देश की जो पीढ़ी पिछली सदी के अंत में या इक्कीसवीं सदी में जन्मी है, उसकी जीवनशैली कई मायने में विशिष्ट है। इसलिए उनको स्वाधीनमा की कीमत समझाने के लिए कुछ अलग प्रयास करने होंगे।

आजादी का मतलब सिर्फ गुलामी से मुक्ति भर नहीं होता। आजादी उस आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की अनुभूति है, जो किसी भी समाज के पूर्ण विकास के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन जब हम आजादी की 78वीं वर्षगांठ पर अपनी डिजिटल पीढ़ी यानी जेन जेड और अल्फा जनरेशन की तरफ नजर उठाकर देखते हैं, तो बहुत निराशा होती है, क्योंकि इन्हें आजादी की कीमत का मानो कोई भान ही नहीं है। दरअसल, इन पीढ़ियों के लिए आजादी एक डिफॉल्ट सेटिंग की तरह है। ये पीढ़ी किसी संघर्ष या बलिदान की विरासत की हिस्सेदार नहीं रही है और न ही इसे आजादी के लिए अपनी जिंदगी में किसी तरह की कोई कीमत चुकानी पड़ी है। ऐसे में इन्हें आजादी की कीमत भी समझ आए तो भला कैसे?

**डिजिटल जनरेशन की दुनिया:** हमारी जेन जेड और अल्फा जनरेशन वास्तव में डिजिटल जनरेशन है। इनकी दुनिया इसके पहले की पीढ़ियों से बिल्कुल अलग है। इन्हें 24X7 मोबाइल चाहिए, रील चैटबॉट और इंस्टेंट रिवॉर्ड्स भी चाहिए। इनके पास सूचना का अकूत भंडार है, लेकिन अपने अनुभवों की मुट्ठी भर पूंजी नहीं है। स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, पसंद का पहनावा और प्यार जैसी हर चीज पर इनका अधिकार है और इनको लगता है यह तो सब जन्मसिद्ध अधिकार है यानी, ये तो हर किसी को मिलते ही मिलते हैं। इनके दिमाग में कभी नहीं आता कि संविधान प्रदत्त अधिकार हमें कितनी कुर्बानियां देकर मिले हैं? हमारी पूर्वज पीढ़ियों को इन्हें पाने के लिए कितनी यातनाएं सहनी पड़ी थीं? न जाने कितने लोग जेल गए, न जाने कितने लोग जेल में ही मर गए, हजारों लोगों ने फांसी का फंदा चूमा। आजादी के लिए अपने सारे सपनों को दांव पर लगा दिया, तब कहीं जाकर हमें यह आजादी मिली है। लेकिन डिजिटल जनरेशन को इस सबका प्रायः कोई एहसास नहीं होता है।

**नए जमाने की जीवनशैली:** हालांकि यह नई जनरेशन संवेदनहीन नहीं है। जलवायु परिवर्तन के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए, लैंगिक समानता के लिए और जानवरों को लेकर संवेदनशीलता इस पीढ़ी में भी खूब है। मगर अपने जमाने के मुद्दों के लिए। नई पीढ़ी विरोध और विद्रोह करने से नहीं डरती बल्कि पिछली पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यवस्थित सुधारों और बदलावों की मांग करती है। लेकिन देखने वाली बात यह है कि इसका ज्यादातर विरोध ऑनलाइन होता है या कहें यह ऑनलाइन विरोध के लिए खुद को ज्यादा फिट पाती है। वास्तविक धरातल पर इसे उतरना कम पसंद है। उनकी इस सोच के लिए नई पीढ़ी को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली पुरानी पीढ़ी को भी कुछ बातें याद रखनी होंगी। पुरानी पीढ़ी के लोग सोचते हैं देश, दुनिया, इतिहास और वर्तमान को लेकर जिस तरह की सोच वो रखते हैं, वैसी ही यह नई पीढ़ी भी रखे। सवाल है, आज की पीढ़ी क्यों अपनी पिछली पीढ़ियों की तरह आजादी को लेकर संवेदनशील नहीं है?

**पिछली पीढ़ी निभाए दायित्व:** मध्य वय और बुजुर्ग वय से गुजर रही पीढ़ी को समझना होगा कि सिर्फ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की बात करने भर से नई पीढ़ी आजादी की लंबी लड़ाई को लेकर अपने पूर्वजों की कृतज्ञ नहीं हो जाएगी। हमें इस पीढ़ी को उन लाखों लोगों की सच्ची कहानियां भी बतानी होंगी, जो साधारण लोग थे और आजादी के लिए कुर्बान हो गए। हजारों किसान, लाखों मजदूर, आदिवासी, स्त्रियां, पत्रकार, आम दस्तकार और शिक्षक जैसे सैकड़ों विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने आजादी के लिए अपने आपको मिटा दिया। हमारी नई पीढ़ियां आजादी में सांस ले सकें, इसलिए पुरानी पीढ़ियों ने खुद को आजादी के संघर्ष की नींव में कैसे गला दिया। हमें नई पीढ़ी को बिना लाग-लपेट के, बिना किसी तरह के अतिवादी जिक्र के, इन आम लोगों के दुख दर्द को भी साझा करना होगा। हमें नई पीढ़ी को ये समझाना होगा कि लाखों जीवंत उदाहरणों से कि हमें जो आजादी मिली है, वह तर्क-वितर्क से नहीं मिली, वह कुछ गिने चुने लोगों के प्रताप से नहीं मिली बल्कि लाखों लोगों की कुर्बानियों से मिली है। जब हम अपनी नई जनरेशन को आजादी की लड़ाई लड़ने वाली पीढ़ी का समूचा ब्योरा सौंपेंगे, तब कहीं जाकर इस पीढ़ी में इस सबके प्रति संवेदना उमड़ेगी। हमें नई पीढ़ी को बताना होगा कि संविधान का उपहार हमें यूं ही नहीं मिल गया।

**उनके सवालों का दें तार्किक जवाब:** नई पीढ़ी अकसर सवाल पूछती है कि स्वाधीनता सेनानियों ने ऐसा क्यों नहीं किया? वैसा क्यों नहीं किया? तो हमें इस पीढ़ी को बताना होगा कि यह पूरा मसला महज कुछ चाहने और कह देने भर का नहीं था। ये बेहद जटिल और बेहद दुरुह मसले थे, इतना आसान नहीं है यह कहना कि फलां ने यह क्यों नहीं किया? कई बार इतिहास की कुछ विरासतें हमारे नियति का हिस्सा होती हैं। विभाजन भी ऐसी ही नियति थी। पुरानी पीढ़ी को जरूरत है कि वह नई पीढ़ी के लिए सिर्फ उपदेशक न बने, बल्कि इस बात की गहराई से पड़ताल करे कि आखिर उसे आजादी के अथक संघर्ष को लेकर उतनी संवेदनशीलता क्यों नहीं है, जितनी होनी चाहिए? तब हम नई पीढ़ी को आजादी की कीमत समझाने में सफल हो सकेंगे। अगर आज की नई पीढ़ी अपने तरीके से आजादी की परिभाषा गढ़ना चाहती है, तो यह उसका हक है। लेकिन जिन्होंने आजादी की लड़ाई में खुद को कुर्बान करके हमारे लिए स्वतंत्रता अर्जित की है, उन्हें यूं ही नहीं भूला जा सकता। पुरानी पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह नई पीढ़ी को इसके महत्व और इसकी संवेदनशीलता को समझाए। यह पीढ़ी तेज है, त्वरित अंदाज में निर्णय लेती है, इसलिए अगर इस पीढ़ी को यह बात सही तरीके से बता दी जाए कि हमें जो आजादी हासिल है, वह लाखों लोगों के बलिदान और देशभक्ति का नतीजा है, तो नई पीढ़ी को आजादी का पाठ पढ़ाना और उसके लिए पर्याप्त संवेदनशील बनाना इतना मुश्किल नहीं होगा। *

---

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

# प्रतिबंधित पत्रकारिता के अनसुने किस्से

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दौरान सिर्फ आंदोलनकारी ही जेल नहीं भेजे गए बल्कि आंदोलन के समर्थन में पत्र-पत्रिकाएं निकालने वाले अनेक संपादकों को भी जेल में डाल दिया गया था। साथ ही अनेक अखबार या उनके विशेष अंक प्रतिबंधित कर दिए गए थे। ऐसे ही प्रतिबंधित अंकों की खोजबीन कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर, संतोष भदौरिया ने उसे पुस्तक रूप दिया है, जिसका नाम है-अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता।

किताब भारत में स्वाधीनता आंदोलन के विकास की चर्चा से शुरू हुई है, जिसमें लेखक ने इसके विभिन्न चरणों के बारे में संक्षिप्त किंतु उपयोगी जानकारी दी है। इसमें लेखक ने स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों की विशेषताओं के साथ व्यावहारिक कमियों को भी उजागर किया है। साथ ही आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास का क्रमबद्ध तरीके से वर्णन किया है। लेखक ने अंग्रेजी राज में प्रतिबंधित, प्रेस अधिनियम के चलते बंद या आर्थिक अभाव की वजह से बंद हुई सभी पत्र-पत्रिकाओं का लगभग पूरा इतिहास खंगालने का प्रयास किया है।

पुस्तक इस मायने में बेहद दिलचस्प है कि प्रतिबंधित पत्रिकाओं में छपे विचार, लेख, कविताओं के अंश भी इसमें दिए गए हैं, जिन्हें आज के समय में पढ़ना एक नए अनुभव से गुजरना है। उस दौर के लेखकों की क्रांतिकारी कविताओं को पढ़कर उस वक्त के भारतीय लोगों के मन में मौजूद राष्ट्रप्रेम के उफान को समझा जा सकता है। मिसाल के तौर पर 'बुंदेलखंड केसरी' में छपी एक कविता को देख सकते हैं, 'देख दशा भारत की हमने निश्चय मन में ठाना है। मातृभूमि की बलिवेदी पर निज बलिदान चढ़ाना है।' प्रतिबंधित पत्र-पत्रिकाओं के छपने के तमाम अनसुने किस्सों को पढ़कर यह पता चलता है कि किताब को लिखने के लिए लेखक ने शोध कार्य में कितना परिश्रम किया है। यह उनके परिश्रम का ही नतीजा है कि किताब ऐतिहासिक विषय पर आधारित होने के बावजूद कहीं भी बोझिल नहीं लगती है। यह पुस्तक उस दौर की प्रतिबंधित पत्रकारिता के क्रमिक इतिहास को सुगठित तरीके से प्रमाणित सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत करती है। *

**किताब:** अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता, **लेखक:** संतोष भदौरिया, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** लोकभारती पेपरबैक्स, प्रयागराज

**विशेषः** जन्माष्टमी, 16 अगस्त

पर्वोल्लास / धीरज बसाक

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव को समर्पित जन्माष्टमी का पर्व पूरे देश में असीम श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर देश के कुछ प्रदेशों एवं प्रमुख कृष्ण मंदिरों में मनाए जाने वाले विशेष उत्सवों के बारे में यहां बता रहे हैं विस्तार से।

# श्रद्धा-उल्लास से मनाया जाता है देश-विदेश में जन्माष्टमी पर्व

### द्वारकाधीश मंदिर द्वारका, गुजरात

**भगवान श्रीकृष्ण** की जन्मभूमि मथुरा और वृंदावन है तो उनकी कर्मभूमि द्वारका है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन की अठखेलियां और रास लीलाएं बृज में कीं, तो द्वारका उन्हें द्वारकाधीश यानी द्वारका के राजा के तौर पर जानता है। भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि द्वारका में जन्माष्टमी उत्सव बहुत ही भव्यता के साथ मनाया जाता है। इस दिन द्वारका के प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर को फूलों और दीयों से सजाया जाता है। इस दिन यहां के खास आकर्षणों में मंगला आरती और झूलन उत्सव प्रमुख हैं। जन्माष्टमी के दिन गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित द्वारका नगरी में देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु और पर्यटक यहां इस मंदिर के जन्माष्टमी उत्सव में शामिल होते हैं। *

### उडुपी श्रीकृष्ण मठ, कर्नाटक

**दक्षिण भारत** में कृष्ण भक्तों की श्रद्धा का एक महत्वपूर्ण केंद्र उडुपी है। जन्माष्टमी के दिन कर्नाटक के उडुपी स्थित उडुपी श्रीकृष्ण मठ में विशेष पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मंदिर में कृष्ण लीला, नाटक, रथयात्रा और ध्वजारोहण जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दौरान पूरे उडुपी शहर में रात्रि जागरण का माहौल होता है। हर तरफ लोग कृष्ण भक्ति में डूबे दिखते हैं। रात 12 बजे भगवान कृष्ण के जन्म के बाद यह उत्सव अपने चरम पर पहुंचता है और फिर दिनभर भजन कीर्तन में रमे रहने वाले भक्तजन प्रसाद खाकर अपना उपवास-व्रत तोड़ते हैं। द्वारका की तरह ही उडुपी में भी जन्माष्टमी पर देश-विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं। *

### इंफाल की रास लीला, मणिपुर

**देश का** उत्तर-पूर्व भी कृष्ण भक्ति में डूबा रहने वाला भू-भाग है। विशेषकर मणिपुर में वैष्णो समुदाय, कृष्ण जन्माष्टमी को पारंपरिक रास लीला और विख्यात मणिपुरी नृत्य के विशिष्ट संयोजन के साथ मनाते हैं। इस दिन पूरे इंफाल में जगह-जगह रास लीलाओं का आयोजन होता है। कृष्ण जन्माष्टमी पर इंफाल में आयोजित होने वाली रास लीला पूरी दुनिया में विख्यात है। इस रास लीला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत भक्तिपूर्ण ढंग से मंचन होता है और यह मंचन विशेष मणिपुरी नृत्य पर आधारित होता है। *

### मुंबई का दही हांडी उत्सव, महाराष्ट्र

**मुंबई में** कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव देश के दूसरे हिस्सों से बिल्कुल अलग जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महाराष्ट्र के लगभग हर शहर में और उसमें भी विशेष तौर पर मुंबई में हर गली में एक ऊंचे स्थान पर दो पेड़ों या दो इमारतों के बीच बंधी रस्सी में बीचों-बीच जहां चारों तरफ खुला मैदान होता है, बहुत ऊंचे एक हांडी बांधी जाती है, जिसमें दही, मिठाईयां और रुपए भरे होते हैं। कृष्ण के बाल सखा माने जाने वाले गोविंदा मानव पिरामिड का आकार बनाकर हवा में हांडी तक पहुंचते हैं और फिर इसे तोड़ते हैं। मुंबई में जन्माष्टमी के दिन गोविंदाओं की टोलियां दही-हांडी उत्सव में घूम-घूमकर हिस्सा लेती हैं और जब एक टोली हांडी तक नहीं पहुंच पाती, तो दूसरी टोली को उसके लिए मौका दिया जाता है। हांडी फोड़ने वाले मित्रमंडल/टोली को उत्सव का आयोजन करने वाली सोसायटी या मुहल्ला पुरस्कृत करता है। *

### विदेशों में जन्माष्टमी उत्सव की छटा

**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** सिर्फ भारत में ही मनाया जाने वाला उत्सव नहीं है। यह एक वैश्विक उत्सव है। भारत के बाहर नेपाल, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम आदि देशों में भी भव्य जन्माष्टमी उत्सव मनाए जाते हैं। नेपाल के पत्थर गांव और काडमांडू स्थित कृष्ण मंदिरों में इस दिन भक्तों की भीड़ उमड़ती है और नृत्य, भजन संध्या तथा झूलों की परंपरा से उत्सव मनाया जाता है। बांग्लादेश में ढाका स्थित जैसोर में जन्माष्टमी को भव्य पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन यहां शोभा यात्रा, भगवत गीता पाठ और सांस्कृतिक नाटकों का मंचन होता है। फिजी, मॉरीशस और सूरीनाम में प्रवासी भारतीय समुदाय के लोग कीर्तन मंडलियों के जरिए कृष्णलीला का मंचन और भजन गाते हैं। इसके अलावा लंदन (ब्रिटेन) के इस्कॉन मंदिर, अमेरिका के न्यूयॉर्क, ह्यूस्टन और लॉस एंजिल्स आदि के इस्कॉन मंदिरों में भी जन्माष्टमी में भव्य सांस्कृतिक उत्सव मनाए जाते हैं। इसके साथ ही यूरोप में रूस, यूक्रेन, हंगरी और जर्मनी के इस्कॉन मंदिरों में भी कृष्ण जन्माष्टमी बहुत भव्य तरीके से आयोजित की जाती है। *

काडमांडू स्थित कृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

कहानी

आशा शर्मा

स्वतंत्रता दिवस का यह मतलब कतई नहीं होता कि इस दिन को हम मौज-मस्ती करके बिता दें। राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशप्रेम से ओत-प्रोत ना हों। स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद ना करें। राष्ट्रीय पर्व के महत्व पर केंद्रित कहानी।

# आजाद वीकेंड

इस बार लंबा वीकेंड आ रहा है, क्यों न ऋषिकेश चलें? सुना है वहां की कैंप लाइफ बहुत शानदार होती है। खाना-पीना और नदी किनारे मस्ती... क्या कहते हो?' बिजी कॉर्पोरेट लाइफ से उकताई राजी को वास्तव में एक ब्रेक की जरूरत महसूस हो रही थी। 'लंबा वीकेंड? कब है यह सुनहरा अवसर?' साथी श्यामली ने चहकते हुए पूछा तो राजी ने टेबल पर रखा कैलेंडर उसके सामने कर दिया। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस का अवकाश और उसके बाद शनिवार और रविवार... देखते ही श्यामली भी तुरंत तैयार हो गई। समीर और अयान तो जैसे अवसर की तलाश में ही थे। सबने शुक्रवार की सुबह ऋषिकेश जाने का कार्यक्रम बना लिया।

'लेकिन उस दिन तो ऑफिस में भी झंडारोहण होगा ना, उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?' अयान ने प्रश्न उठाया।

'क्या यार अयान...! एक तुम्हारे नहीं होने से क्या वहां का सारा प्रोग्राम कैंसल हो जाएगा? चिल करो यार। आजादी का जश्न मनाने ही तो जा रहे हैं हम लोग।' राजी ने बेपरवाही से कहा और उसके बाद सभी प्रश्न समाप्त हो गए। शुक्रवार यानी स्वतंत्रता दिवस की सुबह छह बजे चारों दोस्त कार से रवाना हुए। समीर गाड़ी चला रहा था, अयान उसकी बगल में बैठा था। राजी और श्यामली पीछे की सीट पर पालथी मारकर बैठी थीं।

सुबह की ठंडी हवा से अठखेलियां करते चारों बढ़े जा रहे थे। रास्ते में आने वाले गांवों में स्कूल जाते हाथों में तिरंगा लिए बच्चे सम्मोहित कर रहे थे। जगह-जगह स्कूल और अन्य प्रतिष्ठानों में देशभक्ति के गीत गूंज रहे थे। जोशीले गाने सुनकर श्यामली के रोम खड़े हो गए। शरीर में सिहरन सी दौड़ गई।

'क्या सचमुच लोग आजादी के लिए इतने दीवाने हो गए थे कि उन्हें मरने तक से डर नहीं लगा? हमें देखो! जरा सा भी दर्द बर्दाश्त नहीं होता।' श्यामली ने अचानक कहा तो सब उसे आश्चर्य से देखने लगे।

'जरूर हुए ही होंगे, आजादी क्या प्लेट में परोसी हुई मिली थी। मेरे दादा जी बताते थे कि उनके पिताजी स्वतंत्रता सेनानी थे। नेताजी की आजाद हिंद फौज के सिपाही। आज भी उनकी तस्वीर हमारे घर में रखी है।' अयान ने गर्व से बताया और गर्दन घुमाकर बारी-बारी से सबकी तरफ देखा। उसे बाकी दोस्तों की आंखों में अपने लिए अतिरिक्त सम्मान दिखाई दिया। सबके मुंह आश्चर्य से टेढ़े हुए सो अलग। तभी अचानक समीर ने जोरदार ब्रेक लगाया। पीछे की सीट पर बैठी राजी और श्यामली का सिर आगे की सीट से टकरा गया।

'यह क्या पागलपन है समीर? ऐसे कैसे गाड़ी चला रहे हो? मरवाओगे क्या?' सब एक साथ चिल्लाए। 'वो अचानक सामने से वह लंगड़ा व्यक्ति आ गया था। अभी तो मर ही जाता!' कहते हुए झल्लाए समीर ने गाड़ी रोकी और लपक कर नीचे उतरा। देखा तो वह लंगड़ा व्यक्ति अभी भी उसी तरह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था।

'मरोगे क्या? इस तरह कौन बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है।' समीर उस भिखारी जैसे दिखने वाले बूढ़े दिव्यांग व्यक्ति पर चिल्लाया। वह व्यक्ति अपनी बैसाखी बगल में दबाए चुपचाप सावधान की मुद्रा में खड़ा रहा। अब तक बाकी तीनों भी वहां आ चुके थे। उन्हें भी यह देखकर हैरानी हुई कि उस व्यक्ति के चेहरे पर अभी-अभी घटित होने वाले एक्सीडेंट के बारे में सोचकर किसी भी प्रकार की घबराहट के निशान दिखाई नहीं दे रहे हैं। तभी उस व्यक्ति ने अपनी पोजीशन बदली और बैसाखी को ठीक से अपनी बांह के नीचे दबा लिया।

'सामने उस स्कूल में राष्ट्रगान की धुन बज रही थी ना, इसलिए मैं खड़ा हो गया। माफ करना लेकिन मैं अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के प्रति अपनी भावनाओं और उसके सम्मान को नजरअंदाज नहीं कर सका। आप लोगों को तो शायद पता भी नहीं होगा कि राष्ट्रगान के समय ध्वज के सम्मान में सावधान खड़ा होना चाहिए।' व्यक्ति ने कहा तो सबकी निगाहें झुक गईं। सच जानकर समीर को अपने व्यवहार पर बहुत दुःख हुआ। वह हाथ पकड़ कर उस व्यक्ति को सड़क पार करवाने लगा। तभी उस व्यक्ति ने अपनी बैसाखी हटाई और लकड़ी के सहारे अपने पांवों से चलने लगा। सब एक-दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे। बूढ़े व्यक्ति का यह आचरण किसी के भी समझ में नहीं आया, किंतु वह व्यक्ति उनकी दुविधा समझ गया था।

'मैं भला आजादी की कीमत कैसे भूल सकता हूं। मेरे पिताजी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था और अंग्रेजों की गोली लगने से वे अपना एक पांव गंवा बैठे थे। उन्हीं को याद करते हुए मैं आज के दिन बैसाखी के सहारे चलता हूं ताकि उनकी कुर्बानी भूल नहीं जाऊं। आज की पीढ़ी को भले ही यह मजाक लगता होगा, लेकिन हमारी पीढ़ी के लिए यह दिन कितना महत्व रखता है, यह मैं बता नहीं सकता।' कहते हुए वह व्यक्ति भावुक हो गया। अब तक सब उसका हाथ थामे सड़क के दूसरी पार भी आ गए थे। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं।

'मुझे लगता है हमें वापस जाना चाहिए। क्यों न आज के दिन हम कोई देशभक्ति की भावना वाली फिल्म देखें?' राजी ने नया प्रस्ताव रखा तो सब एक बार फिर से हैरान हो गए लेकिन तुरंत संभल भी गए।

'ठीक कहते हो लेकिन उससे पहले ऑफिस जाकर तिरंगे को सलामी देंगे।' अयान ने आगे जोड़ा तो सब एकमत हो गए और अब गाड़ी ऋषिकेश जाने की बजाय ऑफिस की तरफ दौड़ रही थी। *

नया दौर

लोकमित्र गौतम

भगवान कृष्ण के प्रति भक्तिभाव रखने वालों के लिए तो वे पूज्य हैं ही। लेकिन उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे गुण हैं, जो उन्हें आज के युवाओं के लिए भी आइकन बना देता है। इसीलिए देश-दुनिया के युवाओं में जन्माष्टमी की धूम दिखती है।

# रील्स-मीम्स के दौर में युवाओं के ग्लोबल आइकन हैं श्रीकृष्ण

आज का दौर तेजी से बदलते दृश्यों और पल भर की लोकप्रियता का दौर है। यही कारण है कि आज बड़े-बड़े त्योहारों और उत्सवों का रंग भी नई पीढ़ी के सिर चढ़कर आसानी से नहीं बोलता। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसी रील्स और मीम्स के दौर में जब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक और एक्स पर रील्स, मीम्स और वायरल ट्रेंड संस्कृति का नया चेहरा बन गए हैं, तब जन्माष्टमी दुनिया के लगभग 108 देशों में मनाई जा रही है। और हॉटस्टार जैसे टीवी चैनल जो कि पूरी तरह से खेलों और वेब सीरीज को समर्पित हैं, महीनों पहले से बार-बार विज्ञापन करते हैं कि जन्माष्टमी का कार्यक्रम सीधे प्रसारित किया जाएगा। अगर जन्माष्टमी जैसे पर्व के प्रति पूरी दुनिया में इस किस्म का आकर्षण उभर रहा है, तो इसका अर्थ केवल धार्मिक नहीं है बल्कि इसके पीछे सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल अनुकूलता का गहरा संबंध है।

**परंपरा का डिजिटलीकरणः** हर साल भाद्रपद की अष्टमी को मनाया जाने वाला कृष्ण जन्म का पर्व जन्माष्टमी भारतीय संस्कृति में पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं जन्माष्टमी की रात 12 बजे कंस की जेल में बंद बहन देवकी की कोख से एक दिव्य बालक श्रीकृष्ण जन्म लेते हैं, जो धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रधार बनते हैं। आमतौर पर मंदिरों में भजन संकीर्तनों तक सीमित रहने वाले श्रीकृष्ण, आज की डिजिटल दुनिया में भरपूर स्वीकृत हुए है, तो इसके कुछ कारण हैं।

**कृष्ण केवल भगवान नहीं, एक विचार हैं:** आज का युवा सही मायने में वैश्विक नागरिक है। एक ऐसी दुनिया का नागरिक, जो अपनी पारंपरिक संस्कृति से अगर जुड़ना जानता है, तो उसकी बेड़ियों को तोड़ना भी जानता है। हां, यह जरूर है कि आज का युवा अपने करियर की चिंता में रहता है। आज का युवा रिश्तों में उलझा है और जीवन के नए अर्थ तलाश रहा है। आज का युवा सिस्टम से सवाल करता है। ऐसे में श्रीकृष्ण उसका मार्गदर्शन करते हैं। कृष्ण का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। कष्ट और संकटों के बीच जन्म, बचपन में वध के अनेक प्रयास, युवावस्था में युद्ध, राजनीति, मित्रता और प्रेम के भ्रम, फिर भी इन सारी परेशानियों और संघर्षों के बीच कृष्ण मुस्कुराते रहते हैं, नाचते रहते हैं और बांसुरी बजाते रहते हैं। यह इतना उद्दाम जीवन चरित्र है, जो दुनिया भर के, हर संस्कृति के युवाओं को अपनी ओर खींचता है। कृष्ण सीख देते हैं कि जियो और वह भी पूरी लय में, इसलिए वे युवाओं के चहेते बने हुए हैं।

**संस्कृति की सॉफ्टपावरः** एक तरफ कृष्ण का अद्भुत कैरेक्टर युवाओं को अपनी तरफ चुंबक के माफिक खींचता है, तो दूसरी तरफ जन्माष्टमी का ग्लोबल आकर्षण यह दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति सीमाओं में कैद नहीं है। यही वजह है कि आज न्यूयॉर्क से लेकर नैरोबी तक और लंदन से लेकर सिडनी तक कृष्ण भक्तों ने जन्माष्टमी को ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। रासलीला, दही हांडी और कृष्ण जन्मोत्सव आज भारत की विदेशों में सांस्कृतिक पहचान है। सिर्फ पहचान ही नहीं, यह सांस्कृतिक कूटनीति का हिस्सा भी है। जन्माष्टमी के गीत, डांस, कॉस्ट्यूम ट्रेंड और डिजिटल झांकियां अब डिजिटल आर्ट और क्रिएटिविटी का हिस्सा हैं। ये बदलाव साबित करते हैं कि कृष्ण ग्लोबल आकर्षण का विषय क्यों हैं? कृष्ण का विचार और कृष्ण का होना उस दौर में भी नया और आधुनिक था और इस दौर में भी नया और आधुनिक है। डिजिटल युग में कृष्ण की प्रासंगिकता पहले से ज्यादा बढ़ गई है।

**कृष्ण की यूनिवर्सल अपीलः** श्रीकृष्ण केवल हिंदू धर्म के देवता भर नहीं हैं। वे एक फिलॉस्फर हैं, वे एक योद्धा हैं, वे एक प्रेमी हैं, वे एक दोस्त हैं, वे एक रणनीतिकार हैं और वे एक मेंटर भी हैं। हर संस्कृति में वह किसी न किसी रूप में फिट बैठते हैं। यही कारण है कि वह हर संस्कृति में स्वीकार्य हैं। *

बॉलीवुड ट्रेंड/ अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों के आरंभिक दौर से ही देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। इन्हें एंटरटेनिंग बनाने के लिए काफी फिल्मी मसाले भी डाले जाते हैं। यही वजह है कि ऐसी फिल्मों को दर्शक भी खूब पसंद करते हैं। देशभक्ति पर आधारित कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

# हिंदी फिल्मों में देशभक्ति के रंग

पंद्रह अगस्त हो या छब्बीस जनवरी, राष्ट्रीय पर्व आते ही देशवासियों में देश प्रेम और देशभक्ति की भावनाएं हिलोरे लेने लगती हैं। देश प्रेम की यह भावना हिंदी फिल्मों में भी खूब उभर कर आई है। यह बात अलग है कि समय के साथ हिंदी फिल्मों में देश प्रेम को व्यक्त करने के तरीके बदलते रहे हैं।

### ब्रिटिश काल में हिंदी फिल्में

आजादी के पहले देशभक्ति पर आधारित तमाम फिल्मों में ब्रिटिश शासन को निशाने पर रखकर फिल्मकार देशभक्ति पर आधारित फिल्में बनाते थे। उस दौर में सेंसरशिप सख्त होने के कारण वे सीधे-सीधे तो अंग्रेजों पर हमला नहीं कर सकते थे, लेकिन परोक्ष या सांकेतिक रूप से ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदी फिल्में और उनके गीत स्वंतत्रता संग्राम का खूब समर्थन करते थे। इस संदर्भ में कवि प्रदीप का लिखा गीत 'दूर हटो ऐ दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' प्रासंगिक है। यह गीत वैसे तो ब्रिटिश राज के विरुद्ध था, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों को इस गीत के बारे में बताया गया कि ब्रिटिश शासन का पक्ष लेकर विश्व युद्ध में उसके खिलाफ लड़ने वालों से कहा जा रहा है कि 'हिंदुस्तान हमारा' अर्थात ब्रिटिश शासन का है।

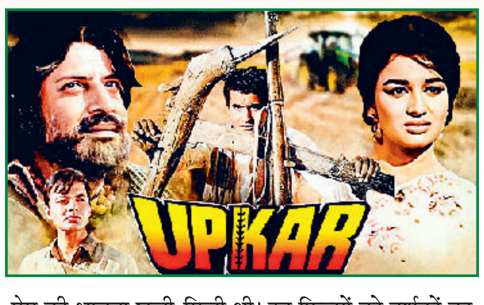

### शुरुआती दौर की फिल्मों में देशभक्ति

आजादी के बाद एक-दो दशक तक बनने वाली देशभक्तिपूर्ण फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के किस्सों को ही ज्यादातर दिखाया जाता रहा। इन फिल्मों में दिलीप कुमार की 'शहीद' प्रमुख थी। उन दिनों शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और झांसी की रानी जैसे महान चरित्रों को केंद्र में रखकर सेल्यूलाइड पर देश प्रेम के रंग भरे गए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के विषय पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' जैसी सार्थक फिल्म बनाई।

### देशभक्ति फिल्मों ने मनोज को बनाया भारत कुमार

भगत सिंह के चरित्र पर आधारित फिल्म 'शहीद' की सफलता के बाद मनोज कुमार को जैसे फिल्म निर्माण की एक अलग दिशा मिल गई। इसके चलते ही मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', 'क्रांति', 'रोटी कपड़ा और मकान' जैसी कई फिल्में बनाईं, जो या तो देशभक्ति पर आधारित थीं या इन फिल्मों में कहीं न कहीं देश प्रेम की भावना घुली-मिली थी। इन फिल्मों को दर्शकों का भी भरपूर प्यार मिला। अपनी देशभक्ति आधारित फिल्मों की वजह से ही मनोज कुमार बॉलीवुड में 'भारत कुमार' के रूप में मशहूर हो गए।

### बदल गया देशभक्ति फिल्मों का स्वरूप

आगे चलकर, खासतौर से भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद देशभक्ति की फिल्मों का एक महत्वपूर्ण विषय भारत और पाकिस्तान का युद्ध और आतंकवाद बन गया। जे.पी. दत्ता ने भारत और पाकिस्तान युद्ध पर आधारित फिल्म 'बॉर्डर' का निर्माण किया। इस मल्टी स्टारर फिल्म को दर्शकों का खूब प्यार मिला। 'बॉर्डर' को कुछ हद तक 'हकीकत' की शैली में बनाने का प्रयास किया गया। इस फिल्म के गीत भी खूब लोकप्रिय हुए थे। जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया फिल्म का गीत 'संदेसे आते हैं' उन दिनों खूब लोकप्रिय हुआ था। यह गीत 15 अगस्त, 26 जनवरी जैसे अवसरों पर आज भी बजाया जाता है।

निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा की सनी देओल और अमीषा पटेल को लेकर बनाई गई फिल्म 'गदर : एक प्रेम कथा' में भी भारत-पाकिस्तान एंगल था। 'हिंदुस्तान जिंदाबाद था, हिंदुस्तान जिंदाबाद है और हिंदुस्तान जिंदाबाद रहेगा' जैसे देशभक्ति से भरे डायलॉग्स ने फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उसके बाद आई आमिर खान की 'सरफरोश' में भी देशभक्ति का यही रंग था। इसमें आतंकी नेटवर्क के तार पाकिस्तान से जोड़कर दिखाया गया था। इस फिल्म को भी अच्छी सफलता हासिल हुई थी। हालांकि 'बॉर्डर' के बाद न तो जेपी दत्ता सफल हो पाए और न ही अनिल शर्मा बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा सके। देशभक्ति पर आधारित उनकी 'रिफ्यूजी' और 'वीर' बॉक्स ऑफिस पर बुरी तरह फ्लॉप रहीं। हालांकि अनिल शर्मा की 'गदर 2' ने अच्छी सफलता हासिल की।

### देशभक्ति फिल्मों का नया ट्रेंड

पिछले कुछ वर्षों से अक्षय कुमार को भारत कुमार की पदवी मिली हुई है। उनकी कई फिल्मों में देशभक्ति की भावना खूब नजर आती है। पाकिस्तान को कोसने, उसकी नापाक हरकतों और उसके आतंकी मंसूबों को भी अक्षय कुमार की कुछ फिल्मों में दिखाया गया है। 'केसरी', 'बेबी', 'एयरलिफ्ट', 'हॉलिडे' और 'रुस्तम' जैसी अक्षय कुमार कई फिल्मों में देशभक्ति के अलग-अलग रंग दिखे। हाल में आई 'केसरी 2' से वह एक बार फिर देश प्रेम की भावना दर्शकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

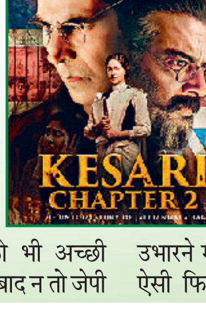


भारतीय युवाओं में क्रिकेट से लेकर राजनीति हर क्षेत्र में पाकिस्तान से आगे रहने और उसे पराजित करने की भावना को उभारने में भी फिल्मकारों को महारथ हासिल है। इसीलिए ऐसी फिल्में भी खूब बनती हैं। *